वहां से धार रवां होकर उस इन्द्री के मुक़ाम पर आती है, जिसके वसीले से उस तरंग की कार्रवाई होनी चाहिये, और फिर वह इंद्री काम करती है। इस तरह जिस क़दर कि कार्रवाई अंग २ की देह में होती है, वह सब चेतन्य यानी सुरत की धारों की शक्ती से, जो कंवलों और चक्रों से जारी हैं, होती है ॥

८—इसी तरह बाहर ब्रहमान्ड में कार्रवाई चेतन्य की धारों से हो रही है, जो बजाय कंवलों और चक्रों के सूरज और चांद और तारागण से जारी हैं ॥

९—(३) तीसरे जो कुछ होता है मालिक की मौज से होता है, जब कि यह बात साफ़ ज़ाहिर और साबित है, कि जिस क़दर कार्रवाई रचना में हो रही है, वह चेतन्य शक्ती की धार से होती है ॥

१०—कोई २ कार्रवाई में जीवों के पिछले अगले करम भी अपना असर पैदा करते हैं, यानी जहां करम की मुख्यता है, या जो करम अपना आपा ठान कर अहंकार के साथ किये जावें, वहां प्रेरना और तरंग का रूप करम अनुसार बनता है ॥

११—जहां अपने स्वामी की मौज और दया का आसरा लेकर निर अहंकार करम किया जाता है, वहां प्रेरक मालिक की मौज है। फिर जो फल या नतीजा

ऐसी कार्रवाई से पैदा होवे वह मालिक का हुकम समझा जाता है, और उसके साथ सेवक बहुत ख़ुशी के साथ मुवाफ़क़त करता है ॥

१२—जब कभी मौज से कोई करम उलटा बन आता है, या किसी करम का फल उलटा हो जाता है, तो भी सेवक को उसे मालिक की मौज और मसलहत समझ कर, उसके साथ जैसे बने तैसे मुवाफ़क़त करना चाहिये ॥

१३—जैसे यह एक मनुष्य की कार्रवाई का हाल लिखा गया, इसी तरह देशों और लोकों की कार्रवाई की कैफ़ियत समझना चाहिये, यानी वहां क़ौम और कौमों या कुल्ल परजा के करम प्रेरक होते हैं, और प्रेमी जन के वास्ते कुल्ल कार्रवाई मालिक के हुकम और मौज से प्रघट होती है ॥

१४—अब थोड़ा बयान उन तीन बातों का जो बैराग से तअल्लुक़ रखती हैं, किया जाता है ॥

१५—पहिले ग़ैर मामूली और ग़ैर ज़रूरी भोगों की चाह न उठाना—भक्तिवान और प्रेमीजन को मुनासिब है, कि फ़ज़ूल और ग़ैर मामूली भोगों की चाह या गुनावन न उठावें, क्योंकि इसमें मन पुष्ट होता है और बारम्बार चाह उठाने की आदत उसको पड़ती

है, कि जो परमार्थी अभ्यास और सतगुरु के सतसंग में ख़लल डालेगी ॥

१६—ऐसा कहा है कि किसी एक भोग की बारम्बार चाह उठाने और गुनावन करने से, उसका एक बार भोग लेना बेहतर है, बशर्ते कि नाजायज़ और ना मुनासिब न होवे। क्योंकि हर बार गुनावन करने से उस भोग की आसा और त्रिश्ना मन में मज़बूत होकर बस जावेगी, यहांतक कि फिर उसका निकालना कठिन हो जावेगा। इसी तरह जब कितने ही भोगों का ख़्याल मन में बसे, या गुनावन रूप होकर मन को उसी ख़्याल में लगाए रक्खें, तो फिर रफ़्तह २ बहुत सा वक़्त इसी काम में सर्फ़ होगा, और भजन और सत संग के वास्ते फ़ुर्सत कम मिलेगी, और फिर परमारथी कार्रवाई बहुत कम होजावेगी, और संसारी स्वभाव भी नहीं बदलेगा ॥

१७—दूसरे अनिच्छित और परिच्छित भोगों में अहतियात के साथ बर्तना ॥

अनिच्छित भोग वह हैं जो बग़ैर इरादह के मौज से प्राप्त हों, और परिच्छित जो वग़ैर अपनी ख़्वाहश के, दूसरा शख़्स मुहब्बत या मेहमानदारी के तौर से सनमुख लावै। इन भोगों में बशर्ते कि नाजायज़

और ना मुनासिब न होवें, अहतियात के साथ बर्ताव करना चाहिये, यानी थोड़ा इस्तेमाल उनका करे और लिप्त न होवे, और दो बारह उसके भोगने की चाह न उठावे। जिस किसी की जिभ्या इंद्री थोड़ी बहुत क़ाबू में है, उस्से ऐसी अहतियात बन पड़ेगी, और जो कोई होशियारी के साथ अपनी इंद्रियों को भोगों की तरफ़ से रोकता और सम्हालता रहता है, उसका बर्तावा भी दुरुस्ती और अहतियात के साथ जारी रहेगा, लेकिन इन दोनों हालत में संत सतगुरु की दया संग होनी चाहिये। बग़ैर दया के मन और इंद्रियाँ अपना ज़ोर दिखलाकर, जीव के इरादह को पूरा नहीं होने देंगी, और किसी न किसी क़िस्म का बिघन डालकर उसकी अहतियात को तोड़देंगी ॥

१८—सच्चे परमार्थ की कमाई और उसके संजमों की सम्हाल बग़ैर मदद सत संग और दया संत सतगुरु के मुशकिल है। इस वास्ते पहिले संत सतगुरु का खोज और फिर उनका सतसंग चेत कर, और उनकी जुक्ती यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास करना ज़रूर है। नहीं तो जो कार्रवाई की जावेगी, वह हठ के साथ त्याग में दाख़िल होगी, और उसका फल बजाय भक्ती और प्रेम के सिर्फ़ शुभ करम का मिलेगा ॥

१९—तीसरे भोगों की त्रिश्ना न करना ॥

मन का ऐसा अंग और स्वभाव है, कि जो भोग या काम इसको रसीला मालूम होता है, तो बार २ उस भोग के प्राप्ती या उस काम के करने की इच्छा और गुनावन उठाता है, और जो प्राप्ती नहीं होती है तो दुखी होता है। यह आदत और स्वभाव सच्चे परमार्थ की कमाई में बहुत ख़लल डालता है, क्योंकि परमार्थी के मन को अनेक भोगों और कामों में बाँध कर, गुनावन और तरंगों के चक्कर में डालता है, और उसके अभ्यास को गंदला और मलीन करता है, और दुरुस्ती के साथ बन्ने नहीं देता। इस वास्ते ऐसे स्वभाव का काटना बहुत ज़रूर है। और इसी स्वभाव को भोगों में बंधन और आशक्ती कहते हैं, जिस्सें सच्चे परमार्थी को परहेज़ करना लाज़िम और मुनासिब है ॥

२०—सच्चे परमार्थी को सब कामों में, और ख़ास कर संसारी और ब्यौहारी कामों में, साधारण तौर पर बर्तना चाहिये। ज़बर पकड़ या बंधन या अहंकार किसी ख़ास काम में नामुनासिब है। क्योंकि मनको जहां तक मुमकिन होवे, झगड़ों बखेड़ों से न्यारा रखने में परमार्थी का बड़ा फ़ायदह है, और लिप्त होने में नुक़सान है ॥

२१—अब मालूम होवे कि जिस किसी का भक्ती अंग में बर्ताव दुरुस्त है, यानी अपने स्वामी को हर दम हाज़िर नाज़िर जानता है, और उसकी मौज में राज़ी रहता है, या उसके साथ जैसे बने तैसे मुवाफ़क़त करने में कोशिश करता है, उसको बाक़ी के सब अंगों में दुरुस्ती के साथ बर्तने में कुछ दिक़्क़त नहीं होगी, यानी उसका बैराग भी सही, और प्रीत प्रतीत कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के चरनों में भी दुरुस्त और मज़बूत होगी, और फिर वह भक्ती के सर्ब अंग में दया और मेहर से, साथ दुरुस्ती और अहतियात के बर्ताव करेगा ॥

बचन-१४

बग़ैर गुरुभक्ती और बिना गुरू चरन पकड़ के चलने और चढ़ने के निजधाम की तरफ़ सच्चा और पूरा उद्धार हरगिज़ मुमकिन नहीं है, और जिन मतों में यह भेद और भक्ती और अभ्यास नहीं जारी है, या इसकी ख़बर भी नहीं है, उनमें जीव का सच्चा कल्यान किसी सूरत में नहीं हो सक्ता ॥

१—मालूम होवे कि पिछले वक्त में हिन्दुओं में उपाशना वालों, और मुसल्मानों में तरीक़तवालों के मत में गुरु की महिमा ज़्यादह थी। लेकिन जब से कि अंतर मुख अभ्यास चढ़ाई मन और सुरत का गुप्त और मौक़ूफ़ हो गया, और बजाय उसके पूजा मूरतों और क़बरों और किताबों और दूसरे निशानों वग़ैरह की बकसरत जारी हुई, तब से गुरु भक्ती की महिमा भी गुप्त हो गई ॥

२—हिंदुओं और मुसलमानों में गुरू की महिमां इस तौर पर बर्णन करी है ॥

हिंदुओं का क़ौल

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्बिष्णू गुरुर्देव महेश्वरः ॥
गुरुरेव परंब्रह्म तस्मई श्रीगुरवे नमः ॥

अर्थ

गुरु स्वरूप को ब्रह्मा बिष्णु और महेश और ख़ुद पारब्रह्म समान मान्ना चाहिये, और ऐसे गुरु को बारम्बार नमसकार है ॥

क़ौल दूसरा

ब्रह्मवित ब्रह्मैव भवती ॥

अर्थ

ब्रह्म का साक्षात जानने वाला आपही ब्रह्म है ॥

मुसल्मानों का क़ौल

मस्जिदे हस्त अंदरूने औलिया ।
सिजदगाहे जुम्ला हस्त आंजा ख़ुदा ॥

अर्थ

औलियाओं का हिरदा मसजिद है और वहां सब को चाहिये कि सिज्दा करें ॥

क़ौल दूसरा

चूंकि करदी ज़ाते मुर्शिद रा क़बूल।
हम ख़ुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल॥

अर्थ

जिसको तुम ने सतगुरु माना उसके अन्तर में ख़ुदा और पैग़म्बर दोनों आ गये॥

क़ौल तीसरा

गुफ़्त पैग़म्बर कि हक़ फ़रमूदः अस्त।
मन न गुंजम हेच दर बाला व पस्त॥
दर ज़मीनो आसमानो अर्श नीज़।
मन न गुंजम ईं यक़ीं दाँ ऐ अज़ीज़॥
दर दिले मोमिन बिगुंजम ईं अजब।
गर मरा ख़्वाही अज़ां दिलहा तलब॥

अर्थ

पैग़म्बर साहब ने कहा है कि ख़ुदा ने फ़रमाया है, कि मैं ऊंचे नीचे देश में नहीं समाता, और न ज़मीन और आसमान और अर्श वग़ैरः में समाता हूं। लेकिन यह अचरज है कि प्रेमी जन के हिरदे में समाता हूं, और जो कोई मुझ को चाहे तो उनसे मांगे॥

क़ौल चौथा

चूं तु ख़्वाही हमनशीनीं बा ख़ुदा ।
रौ तो बिनशीं दर हज़ूरे औलिया ॥

अर्थ

जो कोई कि चाहे कि मालिक के सन्मुख बैठे उसको चाहिये कि औलिया यानी महात्मा के रूबरू बैठे ॥

क़ौल पांचवां

अज़ा तम्मुल्फ़क्र फ़हू अल्लाहू ॥

अर्थ

जिसका फ़क़ीरी का दरजा पूरा हुआ है फिर वही अल्लाह है ॥

३—संतों ने भी गुरु की महिमां ऐसी ही बल्कि इस्से ज़्यादह कही है, और गुरु भक्ती पर वास्ते उद्धार जीव के ज़्यादह ज़ोर दिया है ॥

४—अब इस वक़्त में कि बिद्या और बुद्धी का बिस्तार ज़्यादह से ज़्यादह हो रहा है, और बहुत से नये मत आलिमों और आक़िलों ने ज़ारी किये हैं, और जिन में अंतर मुख अभ्यास का कुछ ज़िकर भी नहीं है, गुरू की ख़ास ज़रूरत बिल्कुल नहीं समझी जाती है, बल्कि जहां कोई ख़ास और शाज़ जगह गुरु भक्ती थोड़ी बहुत जारी है, यह लोग और इन के बचन को मान्नेवाले, उस सच्ची भक्ती और प्रेम को देखकर

अचरज करते हैं, और बसबब बेख़बरी उसके भेद के गुरु भक्तों को नादान और ओछा समझते हैं, और उनकी चाल ढाल और गुरु के साथ दीनता और प्रीत के साथ बर्ताव पर तान मारते हैं, और हंसी उड़ाते हैं ॥

५—जो लोग कि करम कान्डी और शरीअत के पाबंद हैं, उनके मत में भी गुरू की कुछ ज़रूरत नहीं है। पंडित और मौलवी जो कि थोड़ी बहुत बिद्या पढ़े होते हैं, किताब के मुवाफ़िक़ करम कराने के वास्ते काफ़ी समझे जाते हैं ॥

६—इसी तरह जो बिद्यावान इस ज़माने में ज्ञानी और सूफ़ी बन गये हैं, और अपने तईं ब्रह्म और ख़ुदा मानते हैं, गुरू को कुछ नहीं समझते। यह लोग सच्चे ज्ञानी और सच्ची, सूफ़ियों की नक़ल करते हैं यानी उनके बचनों को पढ़कर और विद्या बुद्धि से उनका मतलब समझ कर, अपने तईं ब्रह्म और ख़ुदा मान बैठे हैं, और असल में एक कदम भी उस रास्ते पर, जहां होकर सच्चे ज्ञानी और सूफ़ी अभ्यास करके, ब्रह्म और ख़ुदा के मुक़ाम तक पहुंचे, नहीं चले। सिर्फ़ उनकी बातें सीखकर आप भी वैसी ही बातें बनाने लगे, और असल में मन और इन्द्रियों के क़ाबू में पड़े हैं ॥

७—जो कि बाहरमुख निशानों के पूजनेवाले लोग कसरत से हैं, और बिद्यावानों में ज्ञानी और सूफ़ी कसरत से बन बैठे हैं, और कोई २ नास्तिक हैं, यानी मालिक की मौजूदगी के क़ायल नहीं हैं, इस सबब से बहुत थोड़े आदमी हैं कि जो मालिक से मिलने और उसके दर्शनों की चाह रखते हैं। और ऐसे शख़्सों को बग़ैर पूरे गुरू के चैन नहीं आवैगा, यानी रास्ता और तरीक़ा मिलने का और भेद कुल्ल मालिक और उसके धाम का, सिर्फ़ पूरे गुरु से ही मिल सक़ा है, दूसरा उस भेद और रास्ते और चलने की जुगत से वाक़िफ़ नहीं है ॥

८—अब आम तौर पर कुल्ल जीवों से पुकार कर कहा जाता है, कि जो अपने सच्चे उद्धार का रास्ता जारी करना चाहो, तो जो बचन कि आगे लिखा जाता है, उस के मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत कार्रवाई करो, नहीं तो जनम मरन और दुख सुख का चक्कर कभी नहीं मिटैगा, और कुल्ल मालिक का दर्शन और परम आनंद की प्राप्ती, यानी उसके आदि धाम में बासा, कभी नहीं मिलैगा ॥

९—पहिले गुरू शब्द का अर्थ यानी मतलब बयान किया जाता है, और वह यह है, कि गुरू उसको कहते

हैं जो कि अंधेरे में चाँदना करे, और धुर पद यानी कुल्ल मालिक के धाम का रास्ता और चलने की जुगत बता कर वहां पहुंचावे ॥

१०—अब मालूम करो कि जब तक कि रचना शुरू नहीं हुई थी, कहीं अंधकार और कहीं धुंधकार था और सब अपने हाल से बेख़बर थे, यानी ख़्वाब ग़फ़लत और अजान की नींद में सोये हुये थे, सिर्फ़ कुल्ल मालिक अनामी पुर्ष राधास्वामी, जो कि महा प्रकाश और महा प्रेम और महा ज्ञान और महा चेतन्यता और महा आनंद का भंडार है, जागता था, और अपने में आप मुतवज्जह और मगन था ॥

११—उस अनामी पुर्ष से आदि धार प्रघट हुई, जिसने चांदना किया और शोर ज़हूर का मचाया। इसी धार ने किसी फ़ासले पर ठहर कर, और मँडल बांध कर रचना करी। फिर वहां से दूसरी धार प्रघट होकर नीचे उतरी, और उसने बदस्तूर रचना करी। ऐसे ही हर एक ठेके और मुक़ाम से धार उतरती और रचना करती चली आई, और इस देह में आंख के मुक़ाम पर ठहर कर, और यहां की रचना करके देह और दुनिया का कारोबार करने लगी, और मन और इन्द्री का संग करके, और भोगों और पदार्थों में

आशक़ होकर, दुख सुख भोगने लगी। और जो कि देह माया के मसाले की बनी हुई है, और हमेशह बदलती रहती है, इस सबब से एक देह को छोड़ना, और दूसरी पैदा करके उस में प्रवेश करना, यानी जनम मरन का चक्कर, जारी हो गया ॥

१२—जो धार कि आदि में प्रघट हुई वही शब्द और चेतन्य की धार है, और उसी का नाम राधा, और अनामी पुर्ष का नाम जिसमें से वह धार निकली, स्वामी है। जिस क़दर कि इस धार का बिस्तार होता गया, उसी क़दर शब्द और चेतन्यता रचना करती हुई फैलती गई ॥

१३—अब समझना चाहिये कि यही धार जो आदि में प्रघट हुई, और नीचे उतरती चली आई, अनामी पुर्ष राधास्वामी के चरन की धार है, और ख़ुद अनामी पुर्ष राधास्वामी गुरू हैं, यानी उन्हीं से आदि में चांदना हुआ, और जो चेतन्य और शब्द की धार उन से प्रघट हुई, और चांदना करती चली आई, गुरू का चरन है। यही धार उलट कर स्वामी के चरन में पहुंच कर समा सक्ती है ॥

१४—इस तरह तमाम रचना गुरू के चरन की चेतन्य शक्ती से प्रघट हुई, और उसी की ताक़त से

क़ायम है, और चरन की धार के खिंच जाने से उस का अभाव हो जाता है ॥

१५—यही चरन की धार कुल्ल शक्तियों और रसों और स्वादों और इल्मों और हुनरों और रूपों और सूरतों और रोशनी वग़ैरः २ और कुल्ल रचना की भंडार और करतार है ॥

१६—जो सुरत उलट कर इस धार से लगी वही एक दिन निज भंडार में पहुंचेगी यानी स्वामी से मिलेगी। और जो कोई सुरत और धारों से जो माया की मिलौनी के बाद जारी हुई हैं मिलेगी, वह हमेशह माया देश में भरमती रहेगी ॥

१७—अब ग़ौर करके बिचारो कि जब तक भेद निज घर और रास्ते का, और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके, इस धार यानी गुरु चरन को पकड़ के न चलेगा, तब तक धुर धाम में पहुंचना और परम आनंद को प्राप्त होना किसी सूरत में मुमकिन नहीं है। और भेद और जुगत चलने की संत सतगुरु से मालूम होवेगी ॥

१८—संत सतगुरु उन का नाम है कि जो धुर धाम यानी अनामी पुर्ष के अस्थान से उतर कर, वास्ते उपकार और उद्धार जीवों के पिंड में आये, और

भेद रास्ते का और तरकीब चलने की जीवों को समझा कर, और उसका अभ्यास कराकर अनामी पुर्ष राधास्वामी के धाम में पहुंचाते हैं ॥

१६—संत सतगुरु कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के प्यारे पुत्र और मुसाहब ख़ास हैं। और कभी २ वह मालिक आप भी संत सतगुरु रूप धारन करके इस लोक में प्रघट होता है ॥

२०—जिस जीव या सुरत को कुल्ल मालिक या संत सतगुरु निज धाम में पहुंचाने की नज़र से उपदेश देकर अभ्यास करावें, और जब क़रीब निसूफ़ रास्ते के तै हो जावे, उसको साध गुरू कहते हैं, और जो धुर पहुंच जावे उसको संत कहते हैं ॥

२१—अब समझना चाहिये कि पहिले संत सतगुरु से मिलना और उनका सतसंग करना ज़रूर है, और फिर उनसे उपदेश लेकर अंतर में अभ्यास करना चाहिये, यानी शब्द की धुन और धार को पकड़ के, निज देश की तरफ़ चलना और चढ़ना चाहिये। और जो शब्द की धार है वही चरन की धार है ॥

२२—ऊपर के लिखे से ज़ाहर है कि जो कोई सच्चा और पूरा उद्धार चाहे, उसको गुरुभक्ती करना निहायत ज़रूर है। बाहर संत सतगुरु का सतसंग

और उनकी भक्ती और सेवा, और अंतर में कुल्ल मालिक की भक्ती जो आदि गुरू है, और जो संत सतगुरु का निज रूप है, और उसके चरन यानी शब्द की धार का संग और सेवा ॥

२३—संत सतगुरु की भक्ती बाहर के बंधन काटेगी और ढीला करेगी और अंतर में चलने और चढ़ने में मदद देगी, और अंतर में शब्दभक्ती झीने बंधन काटेगी और ढीला करेगी, और कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ावेगी, और रास्ता तै करने में जल्दी और आसानी होवेगी।

२४—यह दो क़िस्म की भक्ती यानी अंतर और बाहर, हर एक जीव को चाहे औरत होवे या मर्द शौक़ के साथ करनी चाहिये, तब जीव का सच्चा और पूरा कल्यान होना मुमकिन है। नहीं तो सब के सब माया के घेर में पड़े रहेंगे, और उस्से छुट-कारा होना मुशकिल है ॥

२५—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल फ़रमाते हैं, कि जिस मत में गुरु और शब्द भक्ती का उपदेश नहीं है, और सुरत और मन की चढ़ाई का अंतर मुख अभ्यास नहीं है, वह मत ख़ाली और थोड़ा है, और उस में किसी जीव का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा ॥

२६—जो कोई सिवाय सच्चे गुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के और किसी की भक्ती करेगा, वह भक्ती शुभ करम में दाख़िल होगी, और उसका फल चंद रोज़ का सुख इस लोक में या स्वर्ग लोक वग़ैरः में मिल जावेगा। पर सच्चे मालिक का दर्शन और उसके धाम की प्राप्ती हरगिज़ नहीं होगी, और इस वास्ते सच्चा उद्धार भी नहीं होगा, और न कुल्ल मालिक के चरनों का सच्चा प्रेम मन में आवेगा ॥

२७—अब मालूम होवे कि सिर्फ़ राधास्वामी मत और संगत में यह दो क़िसम की भक्ती जारी है। जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी होवे, उसको वहां से कुछ दिन सतसंग करके, भेद और उपदेश इस भक्ती का मिल सक्ता है। और उसके मुवाफ़िक़ अभ्यास करके, कोई दिन में अपने जीव का थोड़ा बहुत कारज बनता हुआ इसी ज़िन्दगी में देख सक्ता है, यानी कुल्ल मालिक सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों की प्रीत उसके हिरदे में बस्ती और बढ़ती जावेगी। और संसार और उसके सामान का प्यार और भाव आहिस्तह २ घटता जावेगा, और अभ्यास में भी जब तब कुछ रस और आनंद मिलता जावेगा, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल

और संत सतगुरु की दया और रक्षा के परचे अंतर और बाहर नज़र आवेंगे ॥

२८—सिवाय उन फ़ायदों के जो ऊपर की दफ़ा में लिखे गये, राधास्वामी मत के अभ्यासी को बहुत बड़ा फ़ायदा यह होगा कि ज़िन्दगी में जिस क़दर उसका अभ्यास बढ़ा हुआ होगा, देह और दुनिया के दुख सुख बनिस्बत दुनियादारों के कम ब्यापेंगे। और अख़ीर यानी मरने के वक़्त बजाय महा कष्ट और कलेश पाने के, उसको अंतर में निहायत दरजे का आनंद, शब्द के प्रघट होने और प्राप्ती दर्शन का हासिल होगा, कि जिसका थोड़ा बहुत निशान मरने के बाद भी उसके चेहरे से ज़ाहर होगा, यानी उसका चेहरा बजाय मुर्दनी छाये हुए और भयानक हो जाने के, किसी क़दर नूरानी और खिला हुआ और सुहावन दिखलाई देगा। यह फ़ायदा किसी जीव को बग़ैर थोड़ा बहुत अंतर अभ्यास सिमटाव, और चढ़ाई मन और सुरत के (जैसा कि राधास्वामी मत में जारी है) हासिल नहीं हो सक्ता ॥

२९—समझवार और बिचारवान जीवों को ग़ौर करना चाहिये, कि यह किस क़दर बड़ की बात है, कि जिस्से जीते जी अपने उद्धार और एक दिन मालिक

के धाम में पहुंचने और दर्शन की प्राप्ती का थोड़ा बहुत सबूत इसी देह में मिल जाता है। किसी मत में ऐसा भारी फ़ायदह इस क़दर आसानी के साथ हासिल होना मुमकिन नहीं है ॥

३०—जिस किसी को इस बचन का यक़ीन न आवे यानी गुरू और शब्द भक्ती की महिमां और फ़ायदह उसके चित्त में न समावे, तो उसको समझाया जाता है, कि आंख के मुक़ाम में तुम्हारी जाग्रत के वक़्त बैठक है, और इस अस्थान से हर रोज़ नींद के बस सूक्षाम और कारन शरीर में सुपन और सुषोपति अवस्था का बर्ताव कर रहे हो और तीनों हालत यानी जाग्रत सुपन और सुषोपति की कैफ़ियत, और उनकी आपस में फ़र्क़ की जांच कर रहे हो। यानी देह और दुनिया की चिन्ता और दुख सुख और मुहब्बत और दुशमनी सिर्फ़ जाग्रत अवस्था में ब्यापती है, और आंख के मुक़ाम से रूह की धार के सरकने पर ज़रा भी उसका असर नहीं रहता। और सुपन अवस्था में सुरत अपनी ताक़त से सामान पैदा करती है, और उनका रस लेती है, उस वक़्त बाहर कोई पदार्थ मौजूद नहीं होता, और अस्थूल मन और इन्द्रियां बेकार होते हैं। और जब कभी सख़्त बुख़ार आता है, या

हालत ग़श की या कोइ और सख़्त बीमारी होती है, उस वक़्त आंखों यानी पुतलियों का खिंचाव ऊपर और अंदर की तरफ़ होता है, और उसके साथही बेहोशी ग़ालिब हो जाती है। और इसी तरह अख़ीर वक़्त यानी मौत के समय, जब नीचे से खिंचाव होता हुआ आंखों की पुतलियां सिमटती और खिचती हैं तब मौत होती है॥

३१—अब इन सब हालतों से साफ़ ज़ाहर है, कि मरने के वक़्त रूह के जाने का रास्ता, आंख के अस्थान से भीतर और ऊंचे की तरफ़ है। और जब किसी बीमारी में थोड़ा खिंचाव रूह का होता है यानी कुछ आंखें चढ़ जाती हैं, तो फ़ौरन बेहोशी और ग़फ़लत पैदा हो जाती है, और ज़्यादह खिंचाव में देह और दुनिया की सुध बुध भी नहीं रहती, बल्कि शीशी सुंघाकर डाक्टर लोग देह को काट देते हैं, और उसकी जीव को ख़बर भी नहीं होती। इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि जिस रास्ते पर मरने के वक़्त काल ज़बरदस्ती घसीट कर दुख देता हुआ ले जावेगा उस रास्ते पर इसी ज़िंदगी में चलने का जतन शुरू करना चाहिये, ताकि अख़ीर वक़्त पर तकलीफ़ न होवे, बल्कि आनंद और सरूर प्राप्त होवे।

और तरकीब इस रास्ते पर चलने की सिर्फ़ राधास्वामी मत में मौजूद है, और उसका उपदेश आम तौर पर जारी है, और सच्चे खोजी और दर्दी को सहज में मिल सक्ता है, और उसका फ़ायदह चंद रोज़ के अभ्यास में देख सक्ता है ।

३२—जो कोई इस बचन को मानेंगे यानी बाहर से संत सतगुरु का सतसंग और भक्ती, और अंतर में शब्द का अभ्यास प्रेम के साथ करेंगे, वे इसी ज़िंदगी में थोड़ा बहुत उसका फ़ायदः देखेंगे, और मरने के वक़्त और भी बाद छोड़ने देह के सुख पावेंगे। और जो बेपरवाही और नादानी से इस बचन को नहीं मानेंगे, यानी अंतर और बाहर सच्चे मालिक और संत सतगुरु की भक्ती नहीं करेंगे, तो उनको इस ज़िंदगी में कोई सहारा और सहाई नहीं मिलैगा, और न मरने के वक़्त पर उनका महा कष्ट और कलेश से बचाव होगा, और न बाद मरने के सच्चा सुख अस्थान मिलैगा, यानी इन सब वक़्तों पर सख़्त कतलीफ़ और दुख भोगते रहेंगे, और जनम मरन का चक्कर बंद नहीं होगा ॥

बचन-१५

और मतों में उद्धार के वास्ते मिहनत और तकलीफ़ ज़्यादह और फ़ायदह बहुत कम, और राधास्वामी मत में थोड़ी मिहनत और तवज्जह से फ़ायदह बहुत हासिल हो सक्ता है और सच्चे उद्धार का रास्ता जारी हो जाता है ॥

१—जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, उन सब में कोई न कोई साधन वास्ते प्राप्ती मुक्ती के बर्णन किया है, पर सच्ची मुक्ती की कैफ़ियत और उस के हासिल होने की जुगत से सब बे ख़बर हैं। और हर चंद बाज़े २ साधन, किसी २ मत में बहुत कठिन और सख़्त मिहनत तलब हैं, पर उनसे फ़ायदह बहुत कम होता है, और मुक्ति पद का रास्ता बिल्कुल् नहीं चलता ॥

२—पहिले तो बहुत कम जीव उन कठिन साधनों को शुरू करते हैं, और उनमें से बहुत कम जीवों से वे साधन थोड़े बहुत बन पड़ते हैं, और फ़ायदह

उनको सिवाय थोड़ी सफ़ाई तन और मन के और कुछ मालूम नहीं होता ॥

३—दूसरे यह कि जिन जीवों से वह साधन थोड़े बहुत बन पड़ते हैं, वे निहायत अहंकारी और अभिमानी हो जाते हैं, और आइंदह उनको खोज सतगुरु और शौक़ तरक़्क़ी अपनी कार्रवाई का नहीं रहता ॥

४—तीसरे यह कि बाज़े मतों में जहां बिद्या और बुद्धी का प्रचार ज़्यादह है, गुरू की कोई ख़ास ज़रूरत या क़दर नहीं समझी जाती और बाज़े साधारन तौर पर बर्ताव जारी रखते हैं। लेकिन जो महिमां और सिफत गुरू की संतों ने बर्णन की है वह किसी के चित्त में नहीं ठहरती, और इस सबब से पूरे गुरू में भाव उन लोगों को नहीं आता और सच्चे मालिक और सच्चे उद्धार के तरीक़े से बे ख़बर रहते हैं ॥

५—बरख़िलाफ़ इसके संत अथवा राधास्वामी मत में कुल्ल मालिक और संत सतगुरु की महिमां ज़्यादह से ज़्यादह बर्णन की है, और फिर भी उसका भेद और सिफ़त जैसा कि चाहिये बयान करने में नहीं आसक्री। और इसी तरह सुरत शब्द योग की महिमां भी बहुत भारी की है, पर लोग उसके भेद से वाक़िफ़ नहीं हैं ॥

६—संत सतगुरु उनका नाम है कि जो धुर अस्थान से वास्ते उद्धार जीवो के आये, या अभ्यास करके धुर अस्थान पर पहुंचे हैं, और कुल्ल मालिक से मिले हैं ॥

७—सुरत शब्द योग मतलब उस अभ्यास से है, कि जिसमें अंतर में तवज्जह करके शब्द सुना जाता है, और उसकी धार को पकड़ करके सुरत ऊपर को चढ़ाई जाती है। और यह शब्द की धार धुर अस्थान से निकल कर, और जहां तहां रास्ते में ठेके लेती हुइ पिंड में उतर कर नेत्र के अस्थान पर ठहरी है, और संत सतगुरु से भेद और जुगत लेकर और उनकी मेहर और दया से अभ्यास करके धुर पद के शब्द को सुन्ती हुई उलट जाती है ॥

८—जो कि सुरत का उतार चेतन्य की धार के संग जो कि शब्द की धार है हुआ है, इस वास्ते उसी धार को पकड़ के यानी शब्द को सुन्ते हुये चल कर चढ़ाई मुमकिन है ॥

९—जो कि आदि में कुल्ल मालिक के चरनों से शब्द की धार प्रघट हुई, और वह धार उतरती हुई पिंड में आई, इस वास्ते उस शब्द या चेतन्य की धार को पकड़ के घर को उलट सक्ती है। और कोई रास्ता धुर घर में जाने का नहीं ॥

१०—सुरत शब्द मारग का अभ्यास बिना उपदेश और दया संत सतगुरु के, जो कि निज भेदी उस मुक़ाम और रास्ते के हैं, बन पड़ना बहुत मुश्किल बल्कि नामुमकिन है। इस वास्ते सब जीवों को जो सच्चा उद्धार चाहें मुनासिब और लाज़िम है, कि पहिले संत सतगुरु के सतसंग में जावें, और उनसे उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करें, और बाहरमुख पूजा मूरत और निशानों वग़ैरः की न करें ॥

११—जो और मतों में बाहर मुख साधन अनेक तरह के बर्णन किये हैं, उनका तअल्लुक़ या सम्बंध अंतर में सुरत की धार के साथ नहीं है, इस सबब से वह करनी सिर्फ़ शुभ करम का फल दे सक्ती है ॥

१२—इस तरह जो साधन हठ जोग के बर्णन किये हैं, और उनके करने में जीवों को निहायत दरजे का कष्ट और कलेश होता है, उनका भी कोई सम्बंध घट में शब्द की धार के साथ नहीं मालूम होता। इस वास्ते यह सब साधन सिर्फ़ मन और इंद्रियों की सफ़ाई का फ़ायदह किसी क़दर देते हैं, पर सुरत और मन की चढ़ाई का फ़ायदह उनमें क़ितई नहीं है ॥

१३—राधास्वामी या संत मत में साफ़ हिदायत है,

कि बग़ैर गुरू और शब्द भक्ती के किसी सूरत में सच्चा और पूरा उद्धार जीव का मुमकिन नहीं है, यानी बाहर संत सतगुरु का सत संग और सेवा और अंतर में भजन यानी शब्द का एकाग्र चित्त होकर सुनना ॥

१४—इस उपदेश के मुवाफ़िक़ कुल्ल जीवों को, जो अपने जीव का सच्चा कल्यान चाहें, कार्रवाई करना मुनासिब और लाज़िम है ॥

१५—सुरत शब्द का अभ्यास इस क़दर आसान है, कि लड़के जवान बूढ़े औरत और मर्द जो थोड़ा भी शौक़ रखते हों सहज में कर सक्के हैं। और संजम भी उसके आसान हैं, कि जिनकी सम्हाल हर शख़्स बिला तक़लीफ़ कर सक्ता है ॥

१६—जो कि सुरत की बैठक जाग्रत अवस्था में आंखों के अस्थान पर है, और वहीं बैठ कर देह और दुनिया के काम किये जाते हैं, और दुख सुख और चिन्ता और फ़िकर के व्यापने का यही अस्थान है, इस वास्ते जब तक कि सुरत इस अस्थान को नहीं छोड़ेगी, और शब्द के वसीले से चढ़ कर अपने निज घर में, जो कुल्ल मालिक का धाम है, न जावेगी, तब तक परम आनंद को प्राप्त न होवेगी, और जनम मरन का चक्कर नहीं छूटेगा, और यह चढ़ाई बग़ैर

संतों की जुगत यानी सुरत शब्द मारग के अभ्यास के मुमकिन नहीं है ॥

१७—जो काम कि मन और सुरत की चढ़ाई में मदद न देवे, वह जीव के उद्धार का साधन नहीं हो सक्ता। इस वास्ते जिस क़दर बाहर मुख कार्रवाई हर एक मत में जारी है, वह सिर्फ़ शुभ करम का फल दे सक्ती है ॥

१८—जो जीव राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ सत-गुरु का सत संग और घट में अभ्यास करेंगे वे एक दिन सच्चे मालिक के धाम में पहुंच कर हमेशह को सुखी हो जावेंगे। और जो अनेक तरह की बाहर मुख कार्रवाइयों में अटके रहेंगे उनका सच्चा उद्धार नहीं होगा, यानी सच्चे मालिक के धाम में नहीं पहुंचेंगे ॥

बचन—१६

जीवों को इस ज़िंदगी में क्या सामान इकट्ठा करना चाहिये कि जो अख़ीर यानी मौत के वक़्त काम देवे और संग चले ॥

१—जीव इस दुनिया में मेहनत करके अनेक तरह के पदार्थ और सामान, अलावह धन और माल के

इकट्ठा कर रहें हैं, इस नज़र से कि वक़्त ज़रूरत के काम आवे और आराम देवे ॥

२—उस सामान के जमा करने से मतलब यह है कि अपनी और अपने कुटम्बियों और रिश्तेदारों की देह और इन्द्रियों और मन को सुख पहुंचे और तकलीफ़ न ब्यापे ॥

३—यह कार्रवाई बड़े शौक़ और मिहनत के साथ हर कोई कर रहा है, लेकिन अपनी रूह यानी जीव आत्मा की, कि उसको किस तरकीब से आराम पहुंच सक़ा है, किसी को ख़बर भी नहीं है, और न कोई उसके लिये कुछ तहक़ीक़ात या जतन करता है ॥

४—मुक्ती की प्राप्ती के वास्ते जीव अनेक तरह के साधन करते नज़र आते हैं, पर जो ग़ौर करके देखा जावे, तो वह साधन सिर्फ़ शुभ करम के फल देने वाले हैं, और सच्ची मुक्ती और सच्चे उद्धार का फ़ायदह उन में ज़रा भी नज़र नहीं आता ॥

५—आम तौर से जीव सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल और उसके धाम से बेख़बर हैं पूरे उद्धार का मुक़ाम यही राधास्वामी धाम है, और सच्चा मुक्ति पद संतों का दसवां द्वार है, और वही पार ब्रह्म का अस्थान है। यह सब मुक़ाम अंतर में हैं और रास्ता

भी वहां पहुँचने का घट में जारी है, पर लोगों को इस भेद की ख़बर नहीं है ॥

६—संतों ने दया करके भेद लखाया है, और जो जीव कि चलना चाहें, उनको अपनी दया की मदद भी देते हैं, और धुर पद में पहुँचाते हैं ॥

७—जो कोई अपना पूरा उद्धार चाहे, उसको लाज़िम है कि संत सतगुरु का सत संग करे, और सेवा करके उनको अपने ऊपर मेहरबान करले, और उपदेश लेकर नित्त अभ्यास यानी रोज़मर्रह रास्ता तै करना शुरू करे, तो एक दिन उनकी दया से कुल्ल मालिक के हज़ूर में रसाई हो जावेगी, और देहियों के कष्ट और कलेश और जनम मरन के चक्कर से बचाव हो जावेगा ॥

८—दुनिया का जिस क़दर सामान जिस किसी ने इकट्ठा किया है, वह उसको इसी दुनिया में मदद दे सक्ता है, यानी उसके मन इंद्री और देह को उनसे आराम पहुंच सक्ता है, और तकलीफ़ किसी क़दर दूर हो सक्ती है। लेकिन यह सामान जीव के कल्यान और सच्चे उद्धार के लिए सिवाय इसके कि संत सतगुरु और प्रेमी जन की सेवा में काम आवे या ग़रीबों और मुहताजों को दिया जावे और कोई मदद ख़ास नहीं कर सक्ता है ॥

९—वह सामान कि जो वक़्त तकलीफ़ और मौत के सच्ची सहायता करे, और धुर पद का रास्ता आसानी से तै करने में मदद देवे, और बाद देह छोड़ने के सुरत के संग चले, कुल्ल मालिक के चरनों में सच्चा प्रेम और सच्ची दीनता है ॥

१०—जिस क़दर कि प्रेम जिस किसी के मन में है, उसी क़दर उसको अपने मन में ताक़त मालूम होती है, और अभ्यास में आसानी और रस मालूम होता है और उसी क़दर नज़दीकी मालिक के चरनों में होती जाती है ॥

११—इस अबिनाशी बस्तु यानी प्रेम की दौलत का हासिल करना, जिस क़दर बन सके हर एक जीव को ज़रूर और फ़र्ज़ है। बग़ैर इसके मनुष्य पशू से बदतर हो जाता है ॥

साखी-१

जा घट प्रेम न संचरे सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की स्वांस लेत बिन प्रान ॥

साखी-२

प्रेम बनिज नहिं कर सके चढ़े न नाम की गैल।
मानुष केरी खालरी ओढ़ फिरे ज्यों बैल ॥

साखी-३

प्रेम कारन जिसने कीन्हा खर्च माल।
धन है वह जन उसको मिलिया प्रेम हाल॥

साखी-४

प्रेम अग्नी अपने हिरदे बालिये।
फ़िक्र भजन और बंदगी का जालिये॥

साखी-५

वाह वाह हे प्रेम तू है निरमला।
ग़ैर को प्यारे सिवा दीन्हा जला॥

साखी-६

पहिले जिसने अपना घर दीन्हा उजाड़।
पाई फिर गुरु प्रेम की दौलत अपार॥

साखी-७

जोगी जंगम सेवड़ा सन्यासी दरवेश।
बिना प्रेम पहुंचे नहीं दुर्लभ सतगुरु देश॥

शब्द प्रेम बानी जिल्द ३

अरी हे सहेली प्यारी-प्रेम की दौलत भारी
छिन २ भक्ति कमाओ॥ टेक॥

भक्ति बिना सब बिरथा करनी। थोथा ज्ञान ध्यान चित धरनी॥ यह नहिं मुक्ति उपाओ॥ १॥

प्रेम बिना कोइ जाय न पारा। पहुँचे नहिं सतगुरु दरबारा ॥ क्यों बिरथा वैस गँवाओ ॥ २ ॥
ऐसा प्रेम गुरू से पावे। जो कोइ उनकी कार कमावे ॥ उन चरनन पर सीस नवाओ ॥ ३ ॥
दीन ग़रीबी धारो मन में। प्रीत बसाओ तुम निज मन में घट में शब्द जगाओ ॥ ४ ॥
दया मेहर से सुरत चढ़ावें। धुर पद में वे लें पहुँचावें ॥ राधास्वामी चरन समाओ ॥ ५ ॥

१२—यह अनमोल पदार्थ यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का प्रेम संत सतगुरु के सतसंग से प्राप्त हो सक़ा है। और कहीं चाहे कोई जिस क़दर तलाश और मिहनत करे, सच्चे प्रेम का किनका भी नहीं मिल सक़ा है, और न हिरदे में ठहर सक़ा है और न बढ़ सक़ा है ॥

१३—जो कि बिना प्रेम कुल्ल मालिक के दरबार में पहुँचना मुमकिन नहीं है, और बिना वहाँ पहुंचे पूरा उद्धार यानी छुटकारा, काल और करम और मन और माया के जाल और घेरे से हो नहीं सक़ा, इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो अपना निरवार चाहें, संत सतगुरु का खोज लगा कर उनके सतसंग में शामिल होना चाहिये और उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करना चाहिये ॥

१४—संत सतगुरु का सतसंग इस दुनिया में निहायत दुर्लभ यानी मुश्किल है, पर सच्चे खोजी और दर्दी को दया करके सहज में मिल जाता है ॥

१५—संत सतगुरु के दर्शन और बचन से उन्हीं जीवों को शान्ती और सीतलता प्राप्त होगी जिनके हिरदे में सच्चा खोज और दर्द सच्चे मालिक के मिलने का है। और जो जीव संसार के भोग और बिलास चाहते हैं, और उन्हीं में उनको रस और आनंद आता है, वे संत सतगुरु के सतसंग में नहीं ठहर सकेंगे, और न उनको उसकी कुछ क़दर मालूम पड़ेगी ॥

१६—जो कोई संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होगा, वे उसको महिमां धुर धाम और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की (जो उनका निज रूप है) सुना कर, चरनों का प्रेम हिरदे में बसावेंगे, और उसी प्रेम के वसीले से अपनी दया का बल देकर घट में रास्तह तै करावेंगे ॥

१७—यह प्रेम जिसके घट में पैदा हुआ वह सदा मगन और किसी क़दर निःचिन्त रहता है और अभ्यास भी उस्से सहज बनता है, और अखीर वक़ पर मन और सुरत के सिमटाव और खिंचाव में मदद देता है, और शब्द और स्वरूप को सहज में प्रघट कराता है ॥

१८—जिसके घट में मालिक के चरनों का प्रेम बसा है, उसको कुछ तकलीफ़ मौत के वक़्त देह छोड़ने की नहीं ब्यापेगी, बल्कि आनंद और सरूर बिशेष उस वक़्त प्राप्त होगा, और जिस क़दर सुरत का खिंचाव होता जावेगा, वह आनंद बढ़ता जावेगा, और जब तक कि धुर पद में पहुंचने का नम्बर आवे, ऊंचे देश के सुख अस्थान में बासा पावेगा, और फिर नरदेही में लाकर और बाक़ी अभ्यास पूरा कराकर, धुर पद में पहुंचावेगा ॥

१९—यह सच्च है कि दुनियादारों के साथ भी दुनिया का सामान और धन और माल नहीं जाता, लेकिन वे भोगों की बासना और कुटम्ब परिवार और धन माल का मोह संग ले जाते हैं और वह अख़ीर वक़्त पर देह के छूटने में बहुत तकलीफ़ देता है। और थोड़ी दूर आगे चलकर यानी छठे चक्र के परे सुन्न में पहुंच कर, फ़ुरना उसी बासना और देह और कुटम्ब के संग की उठाकर सुरत को नीचे खींचता है, और करम अनुसार नई देह में बासा देता है ॥

२०—यह हालत दुनियादारों की बसबब न मिलने संत सतगुरु के (जो कि जीवों के इस लोक और पर-लोक में सच्चे सहाई हैं) और न पैदा होने मालिक

के चरनों के प्रेम के घट में, हुई, यानी मौत का कष्ट और कलेश और जनम मरन का दुख भोगना पड़ा। और जब तक संत सतगुरु से मेला न होगा, और प्रेम घट में प्रघट न होगा, तब तक यह भरमना जीवों की चौरासी के चक्कर में दूर न होगी ॥

२१—इस वास्ते बारम्बार कहा जाता है कि अपने जीव के कल्यान के लिये सब को लाज़िम और फ़र्ज़ है कि संत सतगुरु या राधास्वामी संगत से मिल कर, और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर, जिस क़दर बने अभ्यास करें। और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का थोड़ा बहुत प्रेम अपने हिरदे में जगावें, ताकि इस जिंगदी में और आइंदह को उनकी सहायता होवे, और जनम मरन के कष्ट और कलेश से बच कर, एक दिन परम धाम में बासा पाकर, हमेशः को सुखी हो जावें ॥

बचन-१७

कलजुग करम धरम नहिं कोई।
नाम बिना उद्धार न होई॥

१—नाम की यह महिमां है जो सोते पुर्ष को नाम लेकर पुकारो तो वह जाग उठता है फिर जो

जागता पुर्ष है उसका नाम लेकर पुकारोगे तो क्यों नहीं बोलेगा। इस वास्ते सब जीवों को चाहिये कि अपने जीव के कल्यान के लिये कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम का पता और भेद लेकर उनके निज नाम को जुगत के साथ उच्चारण करें, और अंतर में उसकी धुन सुनें ॥

२—नाम की दो क़िसमें हैं, एक धुन्यात्मक दूसरी बर्णात्मक। धुन्यात्मक नाम वह है कि जिसकी धुन हर दम घट में आपही आप बग़ैर ज़बान और बाजे के हो रही है। बर्णात्मक नाम उसको कहते हैं कि जो लिखने और पढ़ने में आवे ॥

३—बर्णात्मक नाम का सुमिरन आम तौर पर जारी है, मगर लोग उसको बिना भेद और जुगत के करते हैं, इस सबब से फ़ायदा उसका मालूम नहीं पड़ता। जो नामी का भेद लेकर ठिकाने पर सुमिरन करें, तो उसका फ़ायदा जल्द मालूम पड़े ॥

४—धुन्यात्मक नाम का अभ्यास यह है, कि अपने घट में मुक़र्ररह अस्थान पर, मन और सुरत और दृष्ट को जमा कर, नाम की धुन को तवज्जह के साथ सुनें और धुन के आसरे मन और सुरत को ऊंचे देश की तरफ़ चलावें और चढ़ावें ॥

५—जो कि जाग्रत अवस्था में सुरत की बैठक आंखों में है, और यही करम का अस्थान है, यानी यहां ही बैठ कर देह और दुनिया की कार्रवाई होती है, और दुख सुख व्यापता है, इस वास्ते जब तक कि सुरत का अस्थान नहीं बदलेगा, यानी आंख के मुक़ाम से ऊपर और अंदर की तरफ़ नहीं चढ़ाई जावेगी, तब तक देह और दुनिया के साथ बंधन और दुख सुख का भोग नहीं छूटेगा। और यह चढ़ाई बे-ख़तरे और सहज में और पकाई और मज़बूती के साथ, धुन्यात्मक नाम और अभ्यास से हो सक्ती है। और यह अभ्यास बनिस्बत प्राणायाम और दूसरे अभ्यासों के बहुत सहज है और लड़के और जवान और बूढ़े इस्त्री और पुर्ष से, चाहे ग्रहस्त में होवें या बिरक्त, बग़ैर छोड़ने घर बार और रोज़गार के, बिला दिक़्क़त और आसानी के साथ बन सक्ता है॥

६—इस अभ्यास को सुरत शब्द मारग कहते हैं और उसका भेद और तरीक़ा सिर्फ़ शब्द भेदी और शब्द अभ्यासी और शब्द स्वरूपी गुरू से जिनको संत सतगुरु कहते हैं मिल सक्ता है। और किसी को यह भेद मालूम नहीं है, और न ऐसी किसी की गत हो सक्ती है कि अभ्यासी को अंतर में मदद दे सके और अपनी दया

का बल देकर रास्तह तै करावै और एक दिन धुर पद में पहुंचावे ॥

७—ऐसे संत सतगुरु दुर्लभ हैं यानी हर किसी को नहीं मिल सक्के, लेकिन सच्चे खोजी और दर्दी को अपनी दया से सहज में मिल जाते हैं। उनके सत-संग की महिमां बहुत भारी है, सच्ची गढ़त मन की वहीं होती है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का प्रेम हिरदे में बसाया जाता है, और संसार की तरफ़ से चित्त थोड़ा बहुत उपराम हो जाता है, और अभ्यास में थोड़ा बहुत रस मिलता है ॥

८—संत सतगुरु का प्रघट होना इस दुनिया में जीवों के उपकार के वास्ते होता है। उनके दर्शन और सेवा करने और बचन सुन्ने और उनकी जुगत का अभ्यास करने से, सब को प्रेम की बख़्शिश होती है। और वह प्रेम दिन २ हिरदे की सफ़ाई करता है, और संसारी भोगों की बासना घटाता है, और मन और सुरत को ऊंचे देश यानी निज घर की तरफ़ चलाता है ॥

९—सतगुरु की गत भारी है, वे चाहे जिसको छिन भर में निहाल कर सक्के हैं, और सहज में भौसागर के पार निज देश में पहुंचा सक्के हैं ॥

१०—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ती का

बीजा, सिवाय संत सतगुरु के जीवों के हिरदे में और कोई नहीं डाल सक्ता है, और न ऐसी भक्ती को जो किसी के हिरदे में पैदा हुई है कोई शख़्स बढ़ा सक्ता है ॥

११—इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो अबिनाशी उद्धार चाहें, मुनासिब और लाज़िम है, कि पहिले संत सतगुरु को खोज करके उनके सतसंग में शामिल होवें, और वहाँ भक्ती अंग में बर्ताव करें, और प्रेमी जन की हालत और रहनी देख कर, जिस कदर बन सके उनके मुवाफ़िक़ करनी करे और रहनी रहें तब कुछ फ़ायदह हासिल होना शुरू होगा ॥

१२—धुन्यात्मक नाम यानी शब्द की महिमाँ अपार है। कुल्ल रचना शब्द से हुइ, और शब्द ही के आसरे ठहरी हुई है, और शब्द ही के वसीले से कुल्ल कारोबार दुनिया के जारी हैं ॥

१३—शब्द की धार चेतन्य की धार का नाम है। यही जान और नूर की धार है, और शब्द ही चेतन्य का निशान और ज़हूरा है, यानी जब तक मनुष्य या कोई और जानदार बोलता है, ज़िंदह है, और जहां बोल बन्द हुआ मुर्दह है ॥

१४—असल में शब्द की धार धुर पद यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रघट हुई

और वहां से उतर कर और रास्ते के ठेके मुक़र्रर करती हुई, और मंडल बांध कर रचना करती हुई, पिंड में आंखों के मुक़ाम पर ठहरी है, और यहां बैठ कर देह और दुनिया का कारज कर रही है ॥

१५—राधास्वामी देश में माया नहीं है, और जहाँ से कि उसका ज़हूर हुआ, वहाँ से यह सुरत की धार पर ख़ोल पै ख़ोल चढ़ाती चली आई है, और इन्हीं ख़ोलों का नाम देही है ॥

१६—अब जब तक कि यह सब ख़ोल उतर कर सुरत रूहानी यानी निर्मल चेतन्य देश में न पहुंचे, तब तक उसका सच्चा और पूरा निरवार नहीं हो सक्ता, क्योंकि किसी न किसी देहों में बंधन और उनके साथ पदार्थों में आशक्ती रही आवेगी। और जो कि माया के मसाले की बनी हुई देह हमेशह एक रस क़ायम नहीं रह सक्ती इस सबब से जनम मरन का भी चक्कर नहीं छूट सक्ता ॥

१७—सत्तपुर्ष राधास्वामी यानी निर्मल चेतन्य देश माया के घेर के पार है, और वहाँ चढ़ कर पहुंचना सुरत का मृत्यु लोक से, बग़ैर शब्द की धार के किसी सूरत में मुमकिन नहीं है। यानी शब्द को सुन्ती हुई सुरत उसी चेतन्य धार पर जिसके संग

उतरी है, सवार होकर उलट सक्ती है और कोई रास्तह धुर पद में पहुंचने का रचा नहीं गया ॥

१८—शब्द की धार को धुन्यातमक नाम कहते हैं, जो इस नाम के भेद और अभ्यास से बेख़बर हैं उनका सच्चा उद्धार हरगिज़ नहीं हो सक्ता ॥

१९—जो कि बग़ैर शब्द के अभ्यास के उद्धार मुमकिन नहीं है, इस सबब से शब्द यानी नाम की महिमां हर एक मत में बहुत की है, मगर बसबब न मालूम होने भेद और तरीक़ा अभ्यास या जुगत चलने के, कोई जीव उस महिमाँ को सुन कर फ़ायदह नहीं उठा सक्ता ॥

२०—अब कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुरु रूप धारन करके, भेद शब्द का मै जुगत चलने के निहायत सहज तरकीब के साथ खोल कर जीवों को समझाया और बानी में बर्णन किया है, इस वास्ते कुल्ल जीवों को चाहिये कि अपने जीव के असली कल्यान के वास्ते राधास्वामी मत में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर, जिस क़दर बन सके अभ्यास शुरू करें, और अपनी नरदेह जो कि मुशकिल से हाथ आई है सुफल करें। नहीं तो चौरासी में भरमना और ऊँच नीच जोन में पैदा

होकर, हमेशह दुख सुख और जनम मरन का कलेश सहना पड़ेगा ॥

बचन-१८

लेना देना पकड़ना और छोड़ना यानी जिस क़दर बाहर से लेना उसी क़दर देना और जिस क़दर अंतर में लेना, वह उलट कर और बढ़ा कर कुल्ल मालिक के सन्मुख पेश करना । और सत्त को पकड़ना और असत्त को छोड़ना ॥

पहिले बाहर के लेन देन का बर्णन ।

१—दुनिया में लेन देन यानी भाजी ब्यौहार आम तौर पर जारी है, यानी हर एक जीव कितने ही जीवों से कुछ लेता है और देता भी है। यह बर्ताव कुल्ल रचना में चाहे आसमानी है या ज़मीनी जारी है ॥

२—अब ग़ौर से देखो कि कुल्ल जीव इस लोक में अपना २ अहार बाहर से लेते हैं, अस्थूल अंग उसका पेशाब और पाख़ाने के रास्ते निकल जाता है, और सूक्षम अंग पसीने के रास्ते और भी इन्द्रियों की

कार्रवाइ में, जैसे चलना फिरना बैठना उठना देखना सुन्ना और दूसरे कामों के करने यानी मिहनत मज़दूरी में ख़र्च होता है; जो थोड़ा सा हिस्सह बाक़ी रहा वह देह के बढ़ाव और परवरिश में काम आता है ॥

३—जो कि माया के मसाले का झुकाव बाहर की जानिब और नीचे की तरफ़ है, इस वास्ते जिस क़दर उसका ख़ुलासह देह में बढ़ैगा, उसी क़दर झुकाव और पकड़ संसार और संसार के पदार्थों में होगी, और वह ऊंचे देश में सुरत के चढ़ाने के अभ्यास में बिघन कारक होगा। यही सबब है कि रागी और भोगी जीव सच्चे परमार्थ का अभ्यास दुरुस्ती से नहीं कर सक्के, और न सत संग में संत सतगुरु के ठहर सक्के हैं ॥

४—जो सच्चे परमार्थ का अभ्यास करते हैं, वे इस लोक का अहार ज़रूरत के मुवाफ़िक़ ग्रहन करते हैं, और जहां तक मुमकिन होता है उसको यहां का यहीं ख़ारिज और ख़र्च कर देते हैं, यानी देह में जमा होने नहीं देते, सिर्फ़ ज़रूरत और कार्रवाई के मुवाफ़िक़ रखते हैं। क्योंकि इस मसाले का स्वभाव है कि सुरत को बाहर मुखी कार्रवाई में मशग़ूल रखता है, और अंतर में ऊंचे देश की तरफ़ चढ़ने में बिघन डालता है ॥

५—इसी तरह सब इन्द्रियां बाहर से अपने भोग के वक़्त सामान लेती हैं, और जमा भी रखती हैं, लेकिन परमार्थी जीव वक़्त मुनासिब पर और आहिस्तह २ अभ्यास की मदद से, इन इन्द्रियों के इकट्ठे किये हुए सामान को ख़ारिज करता रहता है, या जलाता और मिटाता रहता है ॥

६—सिवाय अहार लेने वाली इन्द्री के और इन्द्रियों का सामान जमा करना यह है, कि जैसे आँख का सूरतों को और कान का पढ़ी और सुनी हुई बातों को वग़ैरः २ ॥ यह इन्द्रियां सामान जमा भी करती हैं, और उस के मुवाफ़िक़ या उससे बढ़ के और सामान की चाह और तरंग पैदा करती हैं, कि जिस के सबब से मन हमेशह चंचल रहता है, और जीव किसी न किसी क़िसम की करतूत करने में अटका रहता है, यानी इस क़दर फ़ुर्सत नहीं पाता कि कभी अपने असली फ़ायदह और नुक़सान का सोच और फ़िकर करे ॥

७—नई २ चाहों और तरंगों के उठाने से जीव का बंधन संसार में दिन २ बढ़ता रहता है, और करम में मशग़ूली और आशक्ती भी बढ़ती रहती है, कि जिसके सबब से छुटकारा निहायत मुशकिल हो गया है ॥

दूसरे अंतर के लेन देन का बयान ।

८—अंतर में जो सुरत की धार चेतन्यता लिये

हुये उतर कर आई है, वही सामान जीव को धुर घर से मिला है, और वही इस पिंड में सर्ब शक्ती और चेतन्यता और प्रेम और आनंद का छोटा भंडार है ॥

९—जो कोई इस चेतन्यता और प्रेम को निपट संसारी कामों में, और हासिल करने मन और इन्द्रियों के भोग और बिलासों में ख़र्च करते हैं, वह अपनी पूंजी गंवाते हैं। और फल उसका यह होता है कि बसबब ज़बर रहने संसार और भोगों की चाह और बासना के, यह जीव बारम्बार देह धरते हैं, और अपने निज घर की कभी सुध भी नहीं लेते, और करम अनुसार नीची जोनों में भी भरमते हैं, और अपनी चेतन्यता शक्ती बरबाद करते हैं ॥

१०—मुनासिब तो यह है कि कुल्ल जीव अपने निज घर की सुध लेकर, और संत सतगुरु से जुगत चलने की दरियाफ़्त करके, थोड़ी बहुत कार्रवाई उसकी करें। और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों की चाह अपने घट में ज़बर पैदा करें कि जिसके सबब से दिन २ इनका दरजा सुरत की चढ़ाई के साथ बढ़ता जावे, और एक दिन कुल्ल मालिक के सन्मुख पहुंच कर उसका दर्शन करें, और निज धाम में जो कि अमर और परम आनंद का भंडार है, बासा पावें ॥

११—इस कार्रवाई यानी सुरत शब्द मारग के अभ्यास से, सुरत दिन २ ऊपर को चढ़ती और चेतन्यता और नूरानियत उसकी बढ़ती जाती है ॥

१२—सुरत को चढ़ा कर राधास्वामी देश में पहुंचना यही काम ज़रूरी और कठिन है। इसी को जो चेतन्यता और प्रेम और आनंद की शक्ती कुल्ल मालिक के चरनों से वक़्त उतार सुरत के हासिल हुई थी, फेर देना यानी वापिस लेजाकर जिसको उलटाना कहते हैं, कुल्ल मालिक के चरनों में पेश करना, समझना चाहिये ॥

१३—जो कोई यह काम सुरत की चढ़ाई का सुरत शब्द मारग का अभ्यास करके नहीं करेंगे उनकी सुरत मुवाफ़िक़ ज़बर संसारी बासना के जनम मरन में पड़ी रहेगी, और नीच ऊँच जोनों में करम अनुसार भरमती रहेगी। इसका नाम अपने मालिक को भूलना और उसकी अमानत वापिस न देना, बल्कि उसको बेजा और ना मुनासिब बर्ताव और ब्यौहार के साथ ख़राब करना और दिन २ घटाना है, और इसी को जीव का अकाज और अकल्यान कहते हैं। ऐसे जीव हमेशः दुख सुख का भोग करते हैं और जनम मरन का कलेश सहते रहेंगे ॥

१४–जिन जीवों को इस बात का ख़्याल है, कि जो पूंजी सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक ने बख़्शी है उसको बढ़ाकर मालिक के सन्मुख पेश करना और किसी क़िसम के दुनियावी झगड़े रगड़े में न पड़ना हर एक पर फ़र्ज़ और लाज़िम है वेही जीव सच्चे परमार्थी और भक्त कहलाते हैं, और उन्हीं को संत सतगुरु अपना दर्शन दे कर और भेद रास्ते और मंज़िलों का समझा कर और चलने की जुगत यानी सुरत शब्द मारग का उपदेश देकर अपनी दया और मेहर से धुर पद में पहुँचावेंगे ॥

तीसरे सत्त को पकड़ना और असत्त को छोड़ना ।

१५—मालूम होवे कि कुल्ल रचना में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल सत्त स्वरूप हैं, या उनकी अंस सुरत सत्त रूप है। और बाक़ी जो कुछ कि है या नज़र आता है, वह मायक और असत्त है, यानी हमेशह एक रस ठहर नहीं सक्ता ॥

१६—रचना में जो नाम और रूप हैं, वह जानदारों में सुरत के नाम और रूप हैं ॥

१७—यह नाम और रूप सुरत के ठहराव से नज़र आते हैं, और जब सुरत का किसी देह से बिजोग हो जाता है, तब उस नाम और रूप का भी अभाव

हो जाता है। क्योंकि सत्त बस्तु सुरत थी, उसके अलहदह होने पर देह यानी असत्त बस्तु का अभाव हो गया ॥

१८—अब बिचार करो कि जो कोई सुरत की (जो कि सत्त बस्तु है) पहिचान करके, एक दूसरे से प्रीत करेगा उसको वक़्त सुरत के बिजोग के इस क़दर झटका नहीं लगेगा, जैसा कि उन लोगों को कष्ट और कलेश होता है, जो कि देह रूप से प्रीत करते हैं, और चेतन्य सुरत की पहिचान नहीं करते और उसके हाल से बेख़बर हैं ॥

१९—ख़ुलासह यह है कि नाशमान पदार्थ में बंधन मन का करने से हमेशह तकलीफ़ पैदा होगी, और बिजोग का कलेश सहना पड़ेगा, इस वास्ते मुनासिब है कि ज़ाहरी स्वरूप में मन और इंद्रियों का सख़्त बंधन न चाहिए, नहीं तो नतीजा उसका दुख और कलेश होगा ॥

२०—जहां कि सत्त और असत्त का आपस में संग या मेल है, उस देश में कोई पदार्थ या नाम और रूप हमेशह एक रस क़ायम नहीं रह सक़ा, फिर जो कोई ऐसी रचना में दिलबंदी करेगा, यानी अपने मन को बांधेगा वह हमेशह जनम और मरन और दुख सुख के चक्कर में पड़ा रहेगा ॥

२१—इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि जहां तक माया का घेर है, वहीं तक असत्त का फेरा है। जब तक उस घेरे के पार सुरत न जावेगी, तब तक असत्त के देश में लाचार उसको किसी न किसी क़िसम की देह धारन करके रहना पड़ेगा। और जब देह नाश-मान और असत्त हुई, तब जनम मरन का चक्कर भी ज़रूर जारी रहेगा, और दुख सुख और कष्ट और कलेश भोगना पड़ेगा ॥

२२—माया के घेर के पार सत्त यानी निर्मल चेतन्य का देश है, और वहीं सत्त पुर्ष राधास्वामी कुल्ल मालिक का धाम है। यह धाम अजर और अमर है और महा चेतन्य और महा ज्ञान और महा आनंद और महा प्रेम और महा सत्त का भंडार है। यहीं से सुरत का आदि में निकास और उतार हुआ और जब इसी धाम में उलट कर सुरत आवेगी तब सच्चा और पूरा छुटकारा काल और माया के जाल से होवेगा, और जनम मरन का चक्कर हट जावेगा और सुरत परम आनंद को प्राप्त होगी ॥

२३—इस वास्ते सब जीवों को जो अपना सच्चा निरवार और परम आनंद की प्राप्ती चाहें मुनासिब और लाज़िम है, कि माया के देश और मायक

रचना से आहिस्तह २ चित्त हटाकर, सत्त देश में पहुँचने का जतन करते रहें–यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास नित्त जारी रक्खें और अभिलाषा राधास्वामी दयाल और उनके धाम के दर्शन की नित्त बढ़ाते और पकाते रहें। तो संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की दया से एकदिन कारज पूरा बन जावेगा ॥

२४–जिस क़दर भूल और भरम है वह माया के देश में है, यानी जहां माया के गिलाफ़ सुरत पर जो सत्त और चेतन्य है चढ़े हुए हैं। जब तक यह ग़िलाफ़ नहीं उतरेंगे, तब तक अज्ञान और ग़फ़लत पूरी तौर से दूर न होगी, और यह बग़ैर चढ़ाई सुरत के सुरत शब्द मारग के अभ्यास से और तरह मुमकिन नहीं है ॥

२५–सुरत शब्द मारग के भेद और अभ्यास से कुल्ल जीव बेख़बर हैं, सिर्फ़ राधास्वामी मत में इसका उपदेश आज कल जारी है। जो कोई सच्चा परमार्थी (जिसके मनमें सच्चा खोज और दर्द है) चाहे, वह राधास्वामी संगत में शामिल होकर, और उपदेश लेकर और अभ्यास शुरू करके, और अपने जीव का प्रत्यक्ष कल्यान होता हुआ देख कर अपना कारज बना सक्ता है ॥

बचन--१९

सतगुरु बचन सुनो और मानो
गुरु चरन प्रीत पालो और चालो
राधास्वामी चरन पकड़ के धाओ
निज घर जाय अमर सुख पाओ

१—जिस किसी को कि दुनिया और उसके सामान की नाशमानता, और जीव का दुनिया में ठहराव थोड़े दिनों का देखकर चेत हुआ है, और वह सच्चे मालिक और उसके धाम का, जो अमर और परम आनंद का भंडार है खोज और पता लगाना चाहता है, और जिसको जुगत चलने और पहुँचने उस मुक़ाम की दरियाफ़्त करना मंज़ूर है, उसके वास्ते यह बचन कहा जाता है ॥

२—पहिले संत सतगुरु या उनकी संगत का खोज लगा कर, उनके सत संग में शामिल होवे, और दीनता और अदब और सच्ची ग़रज़मंदी के साथ उनके सन्मुख जावे और शौक़ और प्रीत के साथ उनके बचन सुने और समझे और जो बचन अपने वास्ते मुफ़ीद और लायक़ देखे, उनके मुवाफ़िक़ कार्रवाई शुरू करे, यानी जो ख़यालात नाक़िस और ना मुनासिब

उसके मन में पहिले से जमा हुए और धरे हैं, उनको अहिस्तह २ निकाले और छोड़े और जो बातें और चाल ढ़ाल उसको वास्ते हासिल करने सच्चे परमार्थ के ज़रूर दरकार हैं, उनको पकड़े और उनके मुवाफ़िक़ अपनी रहनी दुरुस्त करे ॥

३—सिवाय इसके जो प्रेमी और भक्त जन संत सतगुरु के सत संग में शामिल हैं या होते रहते हैं, उनकी करनी और रहनी देख कर उसके मुवाफ़िक़ अपनी कार्रवाई भी दुरुस्त करे, और उमंग के साथ संत सतगुरु और प्रेमी जन की तन मन धन से सेवा करे ॥

४—जो कि संत सतगुरु के सत संग में हर रोज़ महिमां कुल्ल मालिक, और उससे मिलने के मारग यानी सुरत शब्द के अभ्यास की बर्णन की जाती है, उसको सुनकर और समझ कर शौक़ के साथ उपदेश लेकर अंतर अभ्यास शुरू करे, और भेद रास्ते और अस्थानों का अच्छी तरह समझ लेवे ॥

५—संत सतगुरु के सत संग में और भी संत मत में प्रेम की महिमां ज़ोर देकर बर्णन की जाती है क्योंकि बग़ैर प्रेम के न कोई दुनिया का काम दुरुस्त बन सक्ता है, और न परमार्थ का रास्ता चल सक्ता है

और न मन और इंद्रियों के बिकार और माया के बिघन दूर हो सक्ते हैं ॥

६—संत सतगुरु की प्रीत कुल्ल दुनियावी ज़ाहरी और अस्थूल प्रीतों से छुड़ाने वाली है, इस वास्ते सच्चे परमार्थी को पहले मुनासिब है कि उनके चरनों में गहरी प्रीत करे। यह प्रीत सिर्फ़ दुनिया के बंधनों को ढीला करने वाली और हटाने वाली नहीं है बल्कि अंतर अभ्यास में बहुत मदद मन और सुरत के सिमटाव और चढ़ाई में देती है ॥

७—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में गहरी प्रतीत और प्रीत का आना संत सतगुरु की प्रीत और प्रतीत पर मुनहसिर है क्योंकि कुल्ल मालिक का स्वरूप और संत सतगुरु का निज रूप एक ही है। जो संत सतगुरु के ज़ाहरी स्वरूप में गहरा प्यार आया तो निजरूप में भी उसी क़दर मुहब्बत पैदा होवेगी, और यह मुहब्बत शब्द के अभ्यास में गहरी मदद देगी, यानी एक दिन धुर धाम में पहुँचा कर छोड़ेगी ॥

८—जिस क़दर संत सतगुरु और कुल्ल मालिक के चरनों में प्रीत बढ़ती और पकती जावेगी, उसी क़दर अंतर में रास्ता तै होता जावेगा, और रास्ता वही

सुरत की धार है कि जो शब्द की धार है यानी शब्द सुनते हुए सुरत की धार को समेटना और उल्टाना मुमकिन है, और कोई जुगत चढ़ाई की नहीं है और नहीं रची गई है ॥

६—यही सुरत और शब्द की धार कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरन हैं। इस धार यानी चरनों में प्रीत लानी चाहिये, और इसी धार यानी चरनों को पकड़ के घट में चलना चाहिये ॥

१०—यही सुरत और शब्द की धार संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों की धार है, और वही नूर और अमृत और चेतन्य और जान की धार है जिसने इस धार को पकड़ा उसने गोया कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु का दामन पकड़ लिया, या यह कि चरनों में लिपट गया ॥

११—जिसको वक़्त अभ्यास के शब्द साफ़ सुनाई देता है, और कुछ आनंद आता है, या यह कि वक़्त ध्यान के उसके मन और सुरत सिमट कर चरनों में लग जाते हैं, और रस लेते हैं, तो जानना चाहिये कि उसके अभ्यास की हालत अच्छी है, और दिन २ तरक्क़ी होती जावेगी ॥

१२—जिस क़दर अभ्यासी को अंतर में रस और

आनंद मिलता जावेगा, उसी क़दर उसका प्रेम चरनों में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के बढ़ता जावेगा, और उसी क़दर प्रेमी जन में प्यार आता जावेगा, और उसी क़दर संसार और उसके भोग बिलास और सामान से चित्त हटता जावेगा ॥

१३—जैसे कि मन और सुरत सिमट कर चढ़ते जावेंगे, वैसेही रफ़्तह २ अभ्यास का रस और चरनों में प्रेम ज़्यादह बढ़ेगा, और प्रेमी अभ्यासी को महा सुख और आनंद प्राप्त होता जावेगा ॥

१४—यही अभ्यास जो बिलानागह जारी रहेगा एक दिन संत सतगुरु की दया से धुर धाम में पहुँचा कर छोड़ेगा, और वही परम आनंद और महासुख का भंडार है ॥

१५—यह काम जलदी का नहीं है। सुरत का उतार पिंड में छठे चक्र के मुक़ाम से अठारह बीस बर्ष में होता है, और उसमें आसानी बहुत है और मदद पूरी मिलती है, यानी दिन और रात कुटम्बी लोग बराबर उतार में मदद देते हैं। बरख़िलाफ़ इसके चढ़ाई मुश्किल है, और उसका अभ्यास बहुत थोड़ी देर किया जाता है, और बाक़ी वक़्त संसारी कारो-

बार में सर्फ़ होता है, इस वास्ते प्रेमी अभ्यासी को चाहिये कि प्रतीत और प्रीत सहित अपना अभ्यास नेम से हर रोज़ दो बार तीन बार बल्कि चार बार करता रहे, और धीरज के साथ अपनी तरक़्क़ी की जांच करता हुआ कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में शुकरानह करे, और प्रीत और प्रतीत बढ़ाता रहे, तब एक दो तीन या चार जनम में कारज बन जावेगा ॥

१६—मालूम होवे कि हर जनम में तरक़्क़ी ज़्यादह से ज़्यादह होती जावेगी, और संत सतगुरु और उनका सतसंग भी मिलेगा, और जहां से कि अभ्यास पिछले जनम में छोड़ा वहीं से आगे बढ़ेगा, और बनिसबत पहिले जनम के दूसरा जनम हरतरह से बेहतर होगा ॥

१७—जिस किसी के मन में शौक़ तेज़ है और प्रेम ज़बर है, और सफ़ाई जल्द करी है, यानी अपने मन से दुनिया की ख़्वाहशों को निकाल दिया और घटा दिया है, वह एकही जनम में दो जनम की कार्रवाई कर सक्ता है, और इस तरह से उसका काम किसी क़दर जल्द बनना मुमकिन है, लेकिन जो यह सिफ़ात उसमें नहीं हैं और ख़्वाहमख़्वाह जल्दी और घबराहट ज़ाहर करता है, तो समझना

चाहिये कि वह शख़्स नादान है, और अचरज नहीं कि जल्दी के सबब से किसी क़दर निरास होकर अभ्यास छोड़ देवे, और राधास्वामी मत को हक़ीर समझ कर उससे जुदा हो जावे। ऐसे जीवों को नादान और अभागी समझना चाहिये ॥

१८—अक़लमंद और दाना वही है कि जो अपनी हालत और ताक़त और लियाक़त को जांचता और परखता हुआ चलता है, और धीरज के साथ अपना अभ्यास करके उसका रस थोड़ा बहुत लेकर मगन रहता है। और तरक़्क़ी का उम्मैदवार होकर संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाता जाता है। ऐसे शख़्स का कभी अकाज नहीं होगा, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल उसको तरक़्क़ी देते हुए एक दिन निज धाम में बासा देवेंगे ॥

बचन—२०

जागो, भागो, और तोड़ो, जोड़ो ॥ (ख़्वाब ग़फ़लत और मोह नींद से जागो) (निज घर यानी राधास्वामी धाम की तरफ़ भागो) (और जगत

से प्रीत तोड़ो यानी दुनिया का मोह छोड़ो) और (राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत जोड़ो)

१—कुल्ल जीव दुनिया और कुटम्ब परवार के मोह और कारोबार में इस क़दर मशग़ूल हैं, कि उनको कुल्ल मालिक और उसके निज धाम की कभी सुध भी नहीं आती। और बावजूदे कि तमाम जगत का अभाव होता हुआ देखते हैं और फिर अपनी मौत की याद नहीं लाते ॥

और कहते हैं कि कोई मालिक इस रचना का है और फिर उसका खोज या भजन या उसके चरनों में प्रीत नहीं करते ॥

और जानते हैं कि रूह या जीव आत्मा अमर है और फिर तहक़ीक़ नहीं करते कि बाद छोड़ने इस देह और देश के कहां जायँगे, और सुख पावेंगे या दुख ॥

दुनिया में जो थोड़े दिन का ठहराव है, उस अर्सह में वास्ते प्राप्ती सुख और दूर होने दुख के ज़िंदगी में रात दिन मिहनत करते हैं, और आइंदह बाद मौत

के वास्ते मिलने सुख और दूर होने कष्ट और कलेश के कोई जतन नहीं करते। इस क़िस्म की रहनी का नाम ख़्वाब ग़फ़लत और मोह नींद और भूल और भरम है।

२—इस ग़फ़लत और भूल से जिस क़दर जल्द हो सके कुल्ल जीवों को जागना यानी होशियार होना चाहिये, और होशियारी का निशान यह है कि कुल्ल मालिक का खोज लगाना, कि वह (१) कौन और (२) कैसा और (३) कहां है-और उस्से (४) किस तरकीब से मेल हो, (५) और देह धर कर दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से कैसे बचाव होवे॥

३—इन सवालों का पूरा २ जवाब सिर्फ़ राधास्वामी मत में मिल् सक्ता है, और जो मत कि दुनिया में जारी हैं, उनमें इस भेद का बर्णन जैसा चाहिये वैसा नहीं है, और न तरक़ीब चढ़कर पहुँचने सुरत की कुल्ल मालिक के निज धाम में बयान की है॥

४—जवाब उन सवालों के यह हैं कि (१) कुल्ल मालिक सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल हैं, और (२) उनका शब्द स्वरूप है, और (३) उनका निज धाम ऊँचे से ऊँचे देश में है और (४) रास्ता उसका नैन

नगर से (जहां जीव की बैठक वक़ जाग्रत के है) शुरू होता है, और शब्द को सुन्ती हुई यानी धुनको पकड़ के सुरत धुर धाम में पहुँच सक्ती है—और वहाँ दर्शन कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का करके परम आनंद को प्राप्त होती है, और (५) देश में पहुंचने पर बिदेह हो जाती है, यानी रूहानी स्वरूप हो जाता है, और जनम मरन का चक्कर छूट जाता है, क्योंकि दुख का भोग देह के सबब से होता है, और जनम मरन भी देह का होता है, और देह माया के मसाले से तयार होती है, और वह मसाला हमेशह एक रस क़ायम नहीं रहता है ॥

५—जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी है, वह राधास्वामी संगत में शामिल होकर और भेद रास्ते और मुक़ामात का और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू कर सक्ता है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में, प्रीत और प्रतीत बढ़ाने से चाल उसकी सहज और तेज़ चल सक्ती है ॥

६—जिस क़दर दुरुस्ती से अभ्यास ध्यान और भजन का, जिस किसी से बिरह और प्रेम अंग लेकर बन पडेगा, उसी क़दर उसको अंतर में रस और आनंद

प्राप्त होगा और उसी क़दर दुनिया और उसके भोगों से चित्त हटता जावेगा, और ख़्वाहिश भी घटती जावेगी।

७—इसी तरह अभ्यास करते २ कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया और मेहर से एक दिन निज घर में बासा मिल जावेगा और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शन का बिलास और आनंद प्राप्त होगा ॥

८—यह कार्रवाई दुरुस्ती और आसानी से उस वक़्त बन पड़ेगी, जब कि अभ्यासी के मन में संसार और उसके पदार्थों की तरफ़ से किसी क़दर बैराग आवेगा यानी सत संग में बैठ कर और बचन सुनकर, पुराने स्वभाव और आदतें और संसार और उसके भोगों की चाह मन से निकसती और घटती जावेंगी और बजाय उनके परमार्थ की क़दर और कुल्ल मालिक के चरनों का प्रेम और उसके धाम में पहुँचकर दर्शन हासिल करने का शौक़ पैदा होगा ॥

९—सच्चे प्रेमी को ऊपर का लिखा हुआ फ़ायदह संत सतगुरु के सतसंग से जल्द हासिल होगा और उसके प्रेम की हालत उनकी दया और मेहर से बढ़ती जावेगी, और उसके साथ अभ्यास की भी तरक़्क़ी होती जावेगी ॥

१०—इसी तरह दुनिया और उसके सामान से प्रेमी अभ्यासी का आहिस्तह २ पीछा छूटता चला जावेगा, और कुल्ल मालिक के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी ॥

११—खुलासह यह कि अंतर में सुरत इधर से सरकती और ऊंचे देश में चढ़ती चली जावेगी और जिस क़दर यह कार्रवाई बन्ती जावेगी उसी क़दर देह और दुनिया में बंधन घटता और हल्का होता जावेगा । क्योंकि बग़ैर इधर से हटने के मन और सुरत उधर की तरफ़ चल और चढ़ नहीं सक्के ॥

१२—जो लोग कि इस दुनिया को अपना घर और यहां के भोग बिलास और मान वड़ाई और हकूमत को अपना सुख और आनंद समझ रहे हैं, वे अपनी वासना और करनी अनुसार बारम्बार संसार में आवेंगे, और दुख सुख और जनम मरन का कलेश सहते रहेंगे ॥

१३—जो कोई थोड़ा शौक़ लेकर के भी राधास्वामी मत में शामिल होगा, और उपदेश लेकर थोड़ा बहुत अभ्यास सुरत शब्द मारग का शुरू करदेगा, वह भी सतगुरु की मेहर और दया से एक दिन पार हो जावेगा, और जनम मरन के कलेश से जावेगा ॥

१४–इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि जैसे तैसे भाव से राधास्वामी मत में शामिल होकर, और उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर, थोड़ा बहुत अभ्यास उसका शुरू कर दें तो उनका भी बचाव हो जावेगा, यानी एक दिन धुरपद में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होवेंगे ॥

१५—राधास्वामी मत में बड़ा भारी फ़ायदह यह है, कि घर बार और रोज़गार छोड़ना नहीं पड़ता। ग्रहस्त में रहकर राधास्वामी मत का अभ्यास थोड़ा बहुत दुरुस्ती के साथ बन सक्ता है, बशर्ते कि संत सतगुरु के बचन के मुवाफ़िक़ कार्रवाई की जावे, और सहज में जीव का कल्यान हो सक्ता है। दूसरे मतों में यह फ़ायदह हासिल नहीं हो सक्ता क्योंकि जो कोई प्राणों के आसरे घट में चढ़ाई करना चाहे, उसको सख़्त [illegible] और अभ्यास प्राणों के रोकने और चढ़ाने का [illegible]ड़ता है, और वह ग्रहस्त आश्रम में रहकर [illegible]सक्ता। ज़रासी बेअहतियाती में ख़तरा जान [illegible]रु सख़्त बीमारी का रहता है ॥

बचन-२१

पहिले जीव संसार में बसा, रसा, धसा, फँसा और ग्रसा गया, अब जो संत सतगुरु की मेहर से अपने घट में उलटने का जतन करे, और बसे, रसे, धसे, फँसे और ग्रसे-तो उसके जीव का कारज सहज में बन जावे ॥

१—आदि में सुरत राधास्वामी दयाल के चरनों से उतर और ब्रह्मान्ड से गुज़र कर पिन्ड में तीसरे तिल अथवा छठे चक्र के मुक़ाम पर ठहरी, और वहां से दो धार होकर दोनों आँखों में आई और तिल में बसी-और एक धार ज़बान पर आई, और वहां सुरत जिभ्या रस में रसी ॥

२—फिर वही सुरत आंख और कान इंद्रियों के वसीले से संसार में धसी और फैली, और कुटुम्ब परवार और धन और माल के मोह में फँसी और इंद्री रस और भोगों में ग्रसी यानी गिरिफ़्तार हुई ॥

३—इस उतार और फैलाव और फँसाव की

में सुरत इस देह और दुनिया में अपने आसा मंसा और त्रिश्ना और मन के बंधन और प्यार के सबब से दुख सुख भोगती है, और अक्सर चिन्ता और फ़िकर इसको सताते रहते हैं ॥

४—कोई दुख सुख असली हैं और कोई आरज़ी। असली वह हैं कि जो मन और सुरत को अपने करमों के सबब से भोगने पड़ते हैं। और आरज़ी वह हैं कि जो बसबब प्रीत और बंधन दूसरे शख़्सों के दुख सुख का असर पैदा करते हैं और असल में वह दुख सुख उन शख़्सों को अपने करमों का फल मिला है ॥

५—सिवाय मामूली दुख सुख के एक निहायत भारी दुख और तकलीफ़ मौत की हर एक जीव को सहनी पड़ती है और उस्से किसी सूरत में किसी का बचाव नहीं हो सक्ता, और न कोई उस दुख में किसी तरह की मदद और सहायता कर सक्ता है ॥

६—अलावह इस के जो उमरभर संसार के कारोबार, और मन और इन्द्रियों के भोग बिलास में ख़र्च की गई, और यही चाह और यही बासना मनमें बसी रही, तो वह बाद मरने के खींच कर फिर देह में लावेगी। और इस तरह जनम मरन का चक्कर

और ऊंच नींच देह और देश में बासा बराबर जारी रहेगा ॥

७—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सत गुरु फ़रमाते हैं, कि जिस किसी को इन तकलीफ़ों और मुसीबतों से बचना मंज़ूर है, और अमर देश में परम आनंद की प्राप्ती चाहता है, उसको चाहिये कि संत सतगुरु के सतसंग यानी राधास्वामी संगत में शामिल होकर पता और भेद कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम का, और भी हाल रास्ते और मंज़िलों का, और जुगत उसके तै करने की सुरत शब्द मारग का अभ्यास करके, मुफ़स्सिल तौर पर दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करदे, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके सतसंग की सरन द्रिढ़ करे, तब उसका कारज बन्ना शुरू होगा, यानी सुरत और मन उसके सिमटते और घर की तरफ़ चलते और चढ़ते जावेंगे ॥

८—जैसे सुरत पिंड में उतार के वक़्त देह और संसार और कुटुम्ब परवार वग़ैरह में बंधगई, ऐसे ही जब अंतर में शब्द और राधास्वामी दयाल के चरनों में, प्रीत और प्रतीत के साथ लगेगी, तब छुटकारा जनम मरन से और प्राप्ती परम धाम की मुमकिन है ॥

९—इस वास्ते चाहिये कि पहिले सुरत तीसरे तिल में बसे, और शब्द के रस में रसे, और अधर में धुन सुन्ती हुई धसे, और गुरु चरन में प्रेम प्रीत के साथ फंसे, और दर्शन और स्वरूप में ग्रसे, तब संसार की तरफ़ से हटाव, और सच्चे परमार्थ यानी कुल्ल मालिक के चरनों में झुकाव और रास्ते का तै होते जाना मालूम पड़े और रफ़्तह रफ़्तह एक दिन काम पूरा बन जावे ॥

१०—यह सब काम संत सतगुरु या उनके प्रेमी सेवक के सतसंग में बन सक्ता है, और किसी की संगत में यह बात हासिल नहीं हो सक्ती चाहे कोई अमीर होवे या ग़रीब, जब तक सतगुरु के चरनों और उनके सतसंग में सच्चा दीन नहीं होगा, कुछ फ़ैज़ और फ़ायदह नहीं हासिल कर सक्ता ॥

११—इस क़िसम का सतसंग आज कल राधास्वामी मत में जारी है, और पता और भेद कुल्ल मालिक और उसके धाम का वहीं मालूम हो सक्ता है। और हाल रास्तह और मंज़िलों का और तरीक़ा चलने का सुरत शब्द मारग के अभ्यास से, वहां वक़्त उपदेश के समझाया जाता है, और किसी मत में जो आज कल जारी हैं यह भेद और उपदेश बिल्कुल् नहीं है ॥

१२—जो जीव कि मौत के कष्ट और कलेश और

जनम मरन के चक्कर से बचना चाहें, उन को चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर और कोई दिन सतसंग करके उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करें, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन द्रिढ़ करें, तो उन के जीव का कारज सहज में बन जावेगा और अनेक तरह के कष्ट और कलेश और दुक्खों से बचाव हो जावेगा, और अमर धाम में बासा और कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर परम आनंद को प्राप्त होंगे ॥

१३—जो जीव भूल और भरम करके राधास्वामी संगत में शामिल नहीं होंगे, और ऊपर की लिखी हुई कार्रवाई यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास नहीं करेंगे, तो वक़्त मौत के अत्यन्त दुख पावेंगे और चौरासी जोनों में माया के घेर में भरमते रहेंगे, यानी बारम्बार ऊँची नीची देह धर कर दुख सुख और जनम मरन का कलेश सहते रहेंगे ॥

———

बचन-२२

जाँचो सम्हालो और होशयार हो, खोजो रलो और मिलो, और गाओ ध्याओ और बजाओ ॥

(दुनियां का हाल नाशमान्ता का जांच कर सम्हलो यानी उसमें धोखा न खाओ, और होशयार हो यानी उस्से न्यारे होने की पेश्तर मौत के वक़्त से तदबीर करो) (और वह तदबीर यह है कि सतगुरु खोजो और उन के सतसंग में रलो, और उन से प्रेम प्रीत के साथ मिलो) (फिर सतगुरु से उपदेश लेकर उन की महिमा और गुन गाओ, और उनके स्वरूप को निज घट में ध्याओ और अन्तर शब्द को बजाओ यानी चित्त से सुनो) ॥

१—इस दुनिया का हाल जो कोई ग़ौर से देखे, तो मालूम होगा कि बिलकुल धोखे की जगह है यानी इसमें कोई चीज़ ठहराऊ नहीं है, और न अपना ठहराव मुमकिन है, फिर भी लोग यहीं के सामान के वास्ते बारम्बार चाह उठाते हैं, और अनेक तरह के जतन और मिहनत उसके पूरा करने के वास्ते करते हैं, और वक़्त पूरन होने चाह के निहायत मगन होते हैं और मन में फूलते हैं, और फिर वक़्त बिजोग के रोते और दुखी होते नज़र आते हैं ॥

२—अब ख़्याल करो कि ऐसे अस्थान में जहां कि जीवों का ठहराव थोड़े दिनों का है, उन को वह वक़्त सिर्फ़ दुनिया के सामान पैदा करने में और इंद्री भोगों का रस लेने में ख़र्च करना चाहिये, याकि यह काम औसत दरजे पर करें, और निजघर का (जहां से कि आदि में सुरत आई है) खोज करके, और पता और भेद रास्ते और तरीक़ा चलने का दरियाफ़्त करके, कुछ कार्रवाई इस रास्ते पर चलने की भी करें। क्योंकि जो ऐसा न किया जावेगा, तो काल मौत के वक़्त ज़बरदस्ती और झटके देकर सुरत को देह में से निकाल कर ले जावेगा, और महाकष्ट और कलेश देगा। फिर ग़ौर का मुक़ाम है

कि उस रास्ते को जीते जी साफ़ करना, और काल के जुलम से बचने का जतन मुनासिब है या नहीं ॥

३—अक़्लमंद और खोजी आदमी ज़रूर पेश्तर मौत से तहक़ीक़ करेगा, कि सुरत को बाद छोड़ने देह के कहां बिश्राम करना चाहिये, और वह अस्थान कहाँ है, और कौन जतन से उसकी प्राप्ती होवे, और उस जतन की कार्रवाई में लग जावेगा और घट में रस और आनंद पाकर उस जतन की कार्रवाई को बढ़ावेगा, और दुनिया और उसके सामान से आहिस्तह २ उस की तवज्जह घटती और हटती जावेगी ॥

४—यह बात बग़ैर मेहर और दया सतगुरु के हासिल नहीं हो सक़ी, इस वास्ते मुनासिब होगा, कि जब दुनिया का हाल देख कर होशयारी आवे तब संत सतगुरु का खोज करके उनके सतसंग में शामिल होवे, और प्रेमी जन से जो उस सतसंग में शामिल हैं हेल मेल पैदा करें। यहां तक कि उनमें अच्छी तरह से रलमिल जावे, और बचन सुन कर अपने मन और बुद्धि की सफ़ाई करता जावे, और संत सतगुरु की सेवा करके और उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत लाकर मुहब्बत पैदा करे, ताकि पूरा मेल हो जावे, और वे इसको अपना लेवें ॥

५—जब शौक़ के साथ कोई जीव संतों के सतसंग में शामिल होकर उनसे मिलेगा, तब वे दया करके उपदेश सुरत शब्द मारग का देवेंगे, और पता और भेद कुल्ल मालिक के धाम का, और भी रास्ते की मंज़िलों का समझा कर जुगत चलने की बतावेंगे, जिसकी कमाई से कुछ भेद अंतर का खुलेगा ॥

६—जब संत सतगुरु की दया से मन और सुरत का सिमटाव, और चढ़ाई घट में थोड़ी बहुत मालूम पड़े और कुछ रस आवे, तब बारम्बार उनकी और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की महिमां गाना चाहिये और जो २ दया और मेहर उन्होंने समय २ पर की है, उसका मनही मन में शुकराना करना चाहिये ॥

७—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की महिमां अगम और अपार है और किसी की ताक़त नहीं कि जो ज़र्रह भी उनके गुन गा सके लेकिन हर एक प्रेमी को चाहिये, कि अपनी समझ और ताक़त के मुवाफ़िक़ गुन गावे और महिमां बर्णन करे, तो उसके मन में हुलास और उमंग पैदा होगी और प्रेम जागेगा, और अभ्यास सुखाला और रसीला बन पड़ेगा ॥

८—प्रथम अभ्यास नाम का सुमिरन और गुरु स्वरूप के ध्यान का करना चाहिये, इस्से मन निश्चल होगा और रस पावेगा, और अस्थान २ पर ध्यान करने से तरक़्क़ी होती जावेगी, और चरनों में प्यार और विश्वास बढ़ता जावेगा, और अंतर में सफ़ाई होती जावेगी ॥

९—जब गुरु स्वरूप का ध्यान किसी क़दर दुरस्ती से बन पड़ेगा, तब मौज और दया से शब्द भी साफ़ सुनाई देगा। और उस में तवज्जह लगाने से संत सत-गुरु की दया से मन और सुरत चढ़ेंगे, और रफ़्तह २ ऊंचे देश का बिलास और आनंद देखकर मगन होते जावेंगे ॥

१०—इस तरह अभ्यास करने से जीव का कारज सहज में बन्ना शुरू होगा, और एक दिन माया के पार धुर पद में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होगा और जनम मरन और देहियों के बंधन और दुख सुख के भोगसे क़ितई छुटकारा हो जावेगा ॥

११—ऐसी महिमां संत सतगुरु की है, कि उनके चरनों में लग कर जगत के जीव सहज में तरसक़े हैं, यानी माया के घेर के पार पहुंच कर, सत्तपुर्ष राधास्वामी देश में जहां काल और करम मन और माया नहीं है बासा पा सक़े हैं ॥

१२—राधास्वामी संगत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की संगत है। जो उसमें शामिल होगा और उपदेश लेकर, गुरु स्वरूप का ध्यान, और राधास्वामी नाम का सुमिरन, और शब्द का श्रवन मन और सुरत से अपने घट में शुरू करेगा, और भेद लेकर राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत प्रतीत करेगा उसपर बराबर दया होती जावेगी, और हर तरह से उसकी रक्षा और सम्हाल फ़रमा कर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु उस जीव को एक दिन निज घर में पहुँचा कर छोड़ेंगे, जहां से फिर देह और दुनिया में आना नहीं होगा, और जहां सदा आनंद और महा सुख प्राप्त होगा ॥

बचन--२३

मन भूले को समझाओ, शैतानी अंग हटाओ, राधास्वामी चरनन चित लगाओ, गुरु सनमुख दीनता लाओ तब घटमें चढ़ फल पाओ ॥

१—इस दुनिया में सब जीव सच्चे और कुल्ल मालिक और उसके निज धाम को जो उनका निज घर है भूलकर अनेक पदार्थों और जीवों में बन्ध रहे और

भरम रहे हैं। और हरचंद एक दूसरे को मरते देखते हैं, और और चीज़ों का भी अभाव होता हुआ नज़र आता है, पर अपनी मौत का ख़्याल दिल में बहुत कम गुज़रता है और कभी ऐसा सोच पैदा नहीं होता कि बाद मरने के कहां जाना होगा, और वहां सुख मिलेगा या दुख ॥

२—इस दुनिया में थोड़े दिनों का ठहराव है जिस के वास्ते सुख हासिल करने और दुख दूर करने के लिये अनेक जतन करते हैं, और जान्ते हैं कि सुरत यानी जीव आत्मा अमर है, पर ज़रा भी खोज इस बात का नहीं करते, कि आइंदह बाद मरने के सुख मिलेगा या दुख, और कहां बासा पावेंगे और दिन २ संसार और उसके पदार्थों में और भी कुटुम्ब परवार में लिपटते जाते हैं, और उनके निमित्त अनेक तरह के जतन यानी करम करते हैं ॥

३—यह भूल और भरम बग़ैर सतसंग सतगुरु के दूर नहीं हो सक्ता, क्योंकि सिर्फ़ उनके सतसंग में भेद कुल्ल मालिक, और उसके निज धाम और रास्ते की मंज़िलों का बर्णन होता है, और दुनिया और तीन लोक की रचना का (जो माया के घेर में है) निरनै खोल करके किया जाता है, यानी यह

बात ज़ोर के साथ समझाई जाती है, कि जो कोई माया के देश में रहेगा, वह जनम मरन और देहियों के दुख सुख से नहीं बचेगा, जब तक कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शन, और उनके निज धाम में पहुचने की आसा मज़बूत बाँध कर, उस तरफ़ चलने का अभ्यास नहीं करेगा ॥

४—लेकिन भेष और पंडित और जिनके घरों में बंसाबली गुरवाई जारी है, और इन सब के बहकाने से जगत जीव संत सतगुरु और उनके सतसंग की निंद्या करते हैं, और अपने रोज़गार और मान बड़ाई और फ़ायदह के वास्ते नहीं चाहते हैं, कि कोई जीव संतों के सतसंग में शामिल होवे, और सच्चे मत यानी सच्चे कुल्ल मालिक का भेद, और उसके धाम में चढ़कर पहुँचने की जुगती से वाक़िफ़ होकर चलने का अभ्यास करे ॥

५—यह लोग काल पुर्ष के दूत हैं और इस दुनिया के रचना की सम्हाल और रक्षा के लिये पैदा किये गये हैं। जो कोई इनका संग करेगा और बचन मानेगा, वह काल और माया के घेर में रहेगा, और बारम्बार संसार ही में भरमेंगा ॥

६—जो कोई दयाल मत में शामिल होकर, दयाल

पुर्ष के धाम में बासा चाहे, उसको लाज़िम है कि उन जीवों के संग से, जो कालमत का उपदेश करते हैं (जैसे मूरत और निशान की पूजा तीरथ बरत हठजोग बुद्धिजोग प्राणजोग बाचकज्ञान वग़ैरह) बचा रहे और संत सतगुरु के सतसंग का पता लगा कर उसमें शामिल होवे तब सच्चा भेद और सच्चा मारग सच्चे मालिक से मिलने का हासिल होगा ॥

७—मालूम होवे कि सिवाय काल के दूतों के, अपना मन और इंद्रियां भी काल के प्यादे हैं और इनका पूरा २ झुकाव संसार और उसके भोग बिलास की तरफ़ है। संत सतगुरु और उनके सतसंग की मदद लेकर, इनका मुख मोड़ना चाहिये, यानी मन में शौक़ सच्चे मालिक से मिलने का पैदा करके, उसको और भी इन्द्रियों को सच्चे मालिक से मिलने के जतन में मुख्य करके लगाना चाहिये। और दूसरे दरजे पर संसार के कारोबार भी (जो औसत दरजे पर ज़रूरी हैं) जैसे रोज़गार और अपनी देह और घर बार का काम और ब्यौहार वग़ैरह करना चाहिये ॥

८—सिवाय संत सतगुरु के सतसंग और उनकी दया और मेहर के यह मन और इन्द्रियां कभी सीधे नहीं चलेंगे। इस वास्ते पहिले खोज संत सतगुरु और

उनके सतसंग का ज़रूर है, और फिर भाव और दीनता से उस में शामिल होना और बचन सुनकर बिचारना और जिस क़दर बन सके उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करना, तब काल अंग किसी क़दर आहिस्त २ जीता जावेगा, और चित्त थोड़ा बहुत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में लगेगा ॥

९—जिस क़दर भेद और महिमा राधास्वामी दयाल की सतसंग में सुनी जावेगी, उसी क़दर ज़रूरत सच्चे परमार्थ के कमाने की मन में समझी जावेगी, और दया लेकर करनी थोड़ी बहुत बन्ती जावेगी, और अंतर में उसका फ़ायदह भी कुछ २ मिलता जावेगा, इस तरह दिन २ शौक़ और प्यार और प्रतीत, चरनों में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के बढ़ते जावेंगे, और दीनता यानी ग़रज़मंदी ज़्यादह होती जावेगी ॥

१०—प्रेम और दीनता के साथ सुरत शब्द मारग के अभ्यास में, संत सतगुरु की मेहर और दया से तरक़्क़ी होती जावेगी, और घटमें परचे मिलते जावेंगे और मन और सुरत चढ़कर ऊँचे देश का रस और आनंद लेवेंगे, तब इस जीव को संत सतगुरु और उनके सतसंग और उपदेश और दया की महिमा

थोड़ी बहुत मालूम पड़ेगी, और चरनों में प्रीत और प्रतीत दिन २ बढ़ती जावेगी। इसी तरह एक दिन धुरधाम में पहुँच कर कारज पूरा बन जावेगा यानी सुरत अमर और परम आनंद को प्राप्त होगी और अपने सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर चरनों में बासा पावेगी, और जनम मरन और बारम्बार देह धारन करने के कष्ट और कलेश से क़तई छुटकारा हो जावेगा ॥

बचन–२४

उगलो १ निगलो २ देओ ३ और लेओ ४ (१ जगत को उगलो) (२ शब्द की धुन को जो अमीं की धार है निगलो) (३ तन मन धन देओ) (४ प्रेम दान लेओ)

१—जीव बहुत काल से रचना में आया है, और अनेक जनम इसके माया देश में गुज़र गये हैं, इस सबब से बंधन मन इंद्री और देह के संग और भी साथ कुटम्ब परिवार और धन माल और भोगों के, बहुत गाढ़े और मज़बूत होगये हैं, और इसी क़िस्म के ख़ियालात और तरंगें और ख़्वाहशें मन में समारही हैं ॥

२—जब से कि यह जीव हाल के जनम में पैदा हुआ, और उस वक़्त तक कि संत सतगुरु के सन्मुख या उनके सत संग में हाज़िर हुआ—इस अर्सह में कुल्ल वक़्त अपना दुनिया के कारोबार और रोज़गार और देह के ब्यौहार में, और कुटुम्ब परवार और बिरादरी और दोस्त आश्ना वग़ैरह के संगमें ख़र्च करता रहा, और यही ख़्याल और तरंगें और गुनावन हर वक़्त चाहे एकान्त में और चाहे भीड़ भाड़ के संग उठती रहीं, अब जब तक कि यह मसाला निकाला न जाय, तब तक परमार्थ के बचन हिरदे में कैसे समा सक्ते हैं, और क्योंकर याद रह सक्ते हैं ॥

३—इस वास्ते संत सतगुरु फ़रमाते हैं, कि पहिले जगत यानि दुनिया को उगलो यानी अपने मन से संसारी ख़्यालों को हटाओ और कम करो और बजाय उसके सतसंग में हाज़िर होकर, सतगुरु के बचनों को चेत कर सुनो और समझो और अंतर हिरदे में बसाओ ॥

४—जिस क़दर सतसंग के बचन होशयारी के साथ सुन्ने और समझने में आवेंगे, उसी क़दर दुनिया के ख़्याल ओछे और तुच्छ दिखलाई देवेंगे, और मन से आहिस्तह २ निकसते जावेंगे और इसी तरह तरंगे और

ख़्वाहशें भी घटती जावेंगी, तब हिरदा किसी क़दर साफ़ और निर्मल होता जावेगा, और आहिस्तह २ पारमार्थ का रंग चढ़ता जावेगा, यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में भाव और प्यार मन में पैदा होता जावेगा ॥

५—जब इस क़दर असर सतसंग का ज़ाहर होवेगा तब सतगुरु मेहरबान होकर उपदेश ध्यान और भजन का देवेंगे, यानी मन और सुरत को स्वरूप के आसरे समेटने और जमाने, और शब्द के आसरे चढ़ाने और ठहराने का जतन समझावेंगे, और उसका नित्त अभ्यास करावेंगे, इस जुगत से मन को अंतर में रस मिलेगा और सुरत को आनंद प्राप्त होगा ॥

६—जिस क़दर मन और सुरत अंतर में बिरह और प्रेम अंग लेकर शब्द और रूप में लगेंगे उसी क़दर रस और आनंद बढ़ता जावेगा, और शान्ती और ताक़त आती जावेगी, यानी अमीं अहार प्राप्त होना शुरू होगा ॥

७—लेकिन यह हालत उस वक़्त हासिल होगी, जब कि मन से चाहें और तरंगें संसार के भोग बिलास और मान बड़ाई की दूर हो जावेंगी, और गुरु स्वरूप और शब्द में गहरा प्यार आजावेगा, पर यह

कैफ़ियत कुछ अर्सह के सतसंग और अंतर अभ्यास से पैदा होगी ॥

८—मन और इन्द्रियां संसार के भोगों में निहायत लिप्त हो रहे हैं, और ज़ाती झुकाव इनका दुनिया की तरफ़ है। इस वास्ते जो कोई इनका मुख अंतर में मोड़ा चाहे, उस को बहुत खैंचा तानी करनी पड़ती है, यानी कोई दिन मन के साथ लड़ाई और झगड़ा करना पड़ता है, तब यह सतगुरु की मेहर से कोई अर्सह में थोड़ा बहुत सीधा चलता है ॥

९—इस काम के करने के लिये परमार्थी अभ्यासी को मुनासिब है, कि अपने मनकी चौकीदारी करे यानी हर वक़्त इसकी चाल ढाल को निरखता रहे और नामुनासिब और फ़ज़ूल और बेजा तरंगों और ख़्वाहशों को रोकता और काटता जावे तब कोई दिन के अभ्यास से यह मन अपनी पुरानी आदत को आहिस्तह २ छोड़ता जावेगा, और उसी क़दर परमार्थी ख़्याल और ख़्वाहश इस में पैदा होते और बढ़ते जावेंगे ॥

१०—जब प्रेमी परमार्थी के मन और इन्द्री किसी क़दर सीधे चलने लगेंगे, तब उसको तन मन और धन पूरे तौर से सतगुरु के चरनों में अरपन करने

में कुछ दिक़्क़त और तकलीफ़ नहीं होगी यानी सर्व अंग करके वह शख़्स सतगुरु का सच्चा सेवक और प्यारा बालक हो जावेगा, और प्रीत और प्रतीत चरनों की उसके हिरदे में गहरी बस जावेगी ॥

११—उस वक़्त सतगुरु अपनी मेहर और दया से उस प्यारे सेवक को प्रेम की दात बख़्शिश करेंगे कि जिस्से उसका तन मन हरा हो जावेगा, और सुरत प्रेम रंग में सरशार और सरबोर हो जावेगी और धुनों की झनकार और अमी की बर्षा घट में हरदम जारी रहेगी ॥

बचन-२५

बर्णन हाल सुरत के उतार का संसार और पिंड में और जुगत उस के उल्टाने की निज धाम की तरफ़ सुरत शब्द मारग के अभ्यास से जिसका रास्ता घट में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीव के रोज़ मर्रह की हालतों में दिखला दिया है। और ज़ोर दे कर ज़ाहर करना

इस बात का कि सिवाय शब्द के अभ्यास के और कोई रास्ता सुरत की चढ़ाई और उसके निज घर में पहुंचाने का रचा नहीं गया है ॥

१—सुरत यानी रूह कुल्ल मालिक की अंस है, और हमेशह से उसके साथ अभेद थी ॥

२—जब मौज हुई और शब्द प्रघट हुआ, तब धुन रूप धारा जारी हुई यानी सुरत निज धाम से नीचे उतरी, और रास्ते में किसी क़दर फ़ासले पर ठेके या मंज़िल या अस्थान मुक़र्रर करती हुई, और हर मुक़ाम पर मंडल बाँध कर रचना करती हुई, पहिले और दूसरे दरजे यानी निर्मल चेतन्य देश और ब्रह्माण्ड से गुज़र कर, पिंड में दोनों नेत्रों के मध्य में पीछे की तरफ़ यानी अंतर में ठहरी, और वहां से दो धार होकर दोनों आंखों में बैठ कर देह और दुनिया का कारज करने लगी और मन और इन्द्रियों के वसीले से अनेक भोगों और पदार्थों और कुटम्ब परवार और धन और माल में बंध कर दुख सुख का भोग करती है ॥

३—सच्चे और कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी

दयाल की दया और तवज्जह इस सुरत पर बहुत है, यानी जब से यह चरनों से जुदा हुई और धुन रूप होकर नीचे उतरी, और मनुष्य देह में आंखों के मुक़ाम पर ठहरी, तब से कुल्ल मालिक भी इस के संग हर पिंड में मौजूद है और इस पर दया की नज़र रखता है ॥

४—यही सुरत या धुन की धारा हर एक अस्थान पर रूप धरती और रचना करती हुई पिंड में उतरी है, सो वे सब रूप गोया कुल्ल मालिक ने इसकी ख़ातिर आप धरे, और वह हर एक रूप नीचे के स्वरूप का गोया पिता और मालिक और करतार और गुरू है ॥

५—अव्वल दरजे यानी निर्मल चेतन्य देश की हद्द में, जो रूप कि आदि सुरत यानी शब्द की धारा ने धारन किये, वे अरूप या निर्मल चेतन्य स्वरूप हैं, और सब रचना उन्हीं के मंडल यानी घेर में हैं।

६—और जब से कि वह धारा निर्मल माया के देश यानी ब्रहमान्ड में उतरी, वहां जो स्वरूप कि उसने धारन किये, उन में शुद्ध माया की मिलौनी हुई यानी शुद्ध माया के मसाले का ग़िलाफ़ या ख़ोल उन पर चढ़ता गया ॥

७—और जब कि वही धारा मलीन माया के देश यानी पिंड में उतरी, तब से अलावह शुद्ध माया के ख़ोलों के, मलीन माया के ख़ोल उस पर और भी उन रूपों पर, जो कि इस दरजे में धारन किये, चढ़ते गये ॥

८—इस तरह सुरत सर्ब अंग करके उन धाराओं के आधीन हो गई, जो कि हर एक अस्थान से चेतन्य और माया की मिलौनी से प्रघट हुईं, और यह धारें तीसरे दरजे यानी पिंड में ख़ास कर ज़्यादह मलीन और बहुत ताक़त वाली हैं, कि सुरत की धार या तवज्जह को जिधर चाहें उधर खैंच कर ले जाती हैं ॥

९—इसी तरह माया के रचे हुए जड़ पदार्थों में भी खैंच शक़ी बहुत रक्खी गई है, कि वे मन और इंद्रियों की धारों को और उनके साथ सुरत की तवज्जह को अपनी तरफ़ खैंचते हैं ॥

१०—मन और इंद्रियां मतलब उन औज़ारों से है, जो पिंड में इस ग़रज़ से रचे गये कि उनके वसीले से सुरत इस मृत्यु लोक की रचना के साथ मेल और बर्ताव करे, और उस्से काम लेवे ॥

११—जो रचना कि पहिले दरजे यानी निर्मल चेतन्य देश में आदि सुरत ने, सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल

की मौज से करी, और दूसरे दरजे यानी ब्रहमान्ड में सब रचना निरंजन और आद्या ने, अथवा ब्रह्मान्डी मन यानी ब्रह्म और माया ने सत्तपुर्ष से आज्ञा लेकर करी, और तीसरे दरजे यानी पिंड देश में जो रचना हुई, वह तीनों गुन (ब्रह्मा, बिष्णू और महेश) ने, निरंजन जोत के हुक्म से और उनकी मदद से करी, और पिंडीमन और इंद्रियाँ पिंड में कारकुन मुक़र्रर हुये ॥

१२—मालूम होवे कि माया ने बिचित्र रचना इस लोक में, वास्ते लुभाने और बांधने सुरत के जड़ पदार्थों में करी है, और मन और इंद्रियाँ जिस क़दर ताक़त वाली हैं, उनका ज़ोर और शोर बाहर की तरफ़ ज़ारी है। और अन्दर में ऊपर की तरफ़ जो रास्ता गया है उसकी ख़बर तक भी नहीं है, और न उधर कभी फेरा होता है इस सबब से जीव हमेशह दुख सुख के चक्कर में पड़ा रहता है क्योंकि जिन पदार्थों में और भी कुटम्ब परवार वगैरह में जो इस की आशक्री है वह कोई ठहराऊ नहीं हैं ॥

१३—आम तौर पर सब जीवों का झुकाव दुनिया और उसके सामान और भोगों की तरफ़ हो रहा है और बावजूदे कि सब देखते हैं कि एक दिन मरना

ज़रूर पड़ेगा, और उस वक़्त कुल्ल असबाब धन और माल और कुटम्ब और परवार एक छिन में छोड़ दिये जायँगे, और सिवाय हसरत और अफ़सोस के कुछ हाथ नहीं लगेगा। फिर भी किसी को चेत नहीं होता कि मौत की तक़लीफ़ के दूर करने का जतन करें ॥

१४—जब मौत के वक़्त काल सुरत को ऊपर की तरफ़ खींचेगा और वह अपने स्वभाव और दुनिया में बंधन और आशक्ती के मुवाफ़िक, नीचे और बाहर की तरफ़ को झोका खावेगी तो इस खैंचा तानी में मरने वाले को भारी तकलीफ़ होगी, और आगे चल कर बहुत दुख जो अपने कर्मों का फल है सहना पड़ेगा। जिसका थोड़ा सा हाल मुरदे की सूरत से जो निहायत भयानक और पिटी कुटी हो जाती है ज़ाहर होता है ॥

१५—इस दुख में कोई दुनिया का सामान या कुटम्ब और बिरादरी किसी तरह की सहायता नहीं कर सक्के, और न धन और माल कुछ मदद दे सक्ता है। अलबत्तह संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन लेने से और भी उन का उपदेश मान्ने यानी सुरत शब्द मारग की कमाई करने से, मौत का दुख बिलकुल नहीं ब्याप सक्ता है

बल्कि गहरा आनंद और ख़ुशी कुल्ल मालिक के दर्शनों के प्राप्ती की हासिल हो सक्ती है ॥

१६—इस वास्ते जिस किसी को अपना सच्चा छुट-कारा जनम मरन और देहियों के दुख सुख से मंज़ूर है, उस को चाहिये कि सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की संगत में शामिल होकर और चित्त से चेत कर बचन सुने और समझे और उपदेश लेकर सुरत शब्द मारग का अभ्यास शुरू करे, तो बेशक बचाव हो जावेगा ॥

१७—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की इस क़दर दया जीवों पर है, कि जब से उन को मनुष्य देह में पैदा किया है तब से आप भी उन के अंग संग हैं। और उन को रास्ता सच्चे उद्धार और मुक्ती का, और भी अपने निज घर में जाने का साफ़ उनके रोज़ मर्रह की कार्रवाई में दिखला दिया है। फिर भी जीव खोज न करें और अनेक तरह के करम और धरम और भरम में फँसे रहें, और रोज़गारियों के कहने को मान कर धोखा खाते रहें, तो मुक़ाम अफ़सोस और लाचारी का है ॥

१८—वह रास्ता यह है, कि जीव की बैठक जाग्रत अवस्था में आँख के मुक़ाम पर है, और सोते वक़्

वहां से सुरत की धार अंतर में ऊपर की तरफ़ खिँच जाती है। पहिले सूक्षम शरीर में जहां सुपना देखता है, और फिर कारन शरीर में जहां गहरी नींद में सोता है और सक्ते यानी सन्नपात की बीमारी में उसके भी परे, जबकि स्वांस और नब्ज़ छूट जाती है इस वक़्त में जिस २ शरीर से धार खिंचती जाती है, वही बेकार होता जाता है, और उसी के बंधन ढीले हो जाते हैं, और एक का दुख सुख दूसरे शरीर में नहीं ब्यापता ॥

१६--ऊपर के बयान से साफ़ ज़ाहर है, कि मुक्ती और उद्धार यानी देहियों और रचना के बंधनों से छूटने का रास्ता, आँख के मुक़ाम से अंदर में ऊपर की तरफ़ जारी है। जो कोई उस रास्ते पर चलने का जतन करे, वह सुतंत्र यानी बाइख़्तियार अपने, जब चाहे तब अस्थूल सूक्षम और कारन देहियों से न्यारा हो सक्ता है ॥

२०—अलावह इसके मरने के वक़्त जीव इसी रास्ते से यानी आंख के मुक़ाम से घर की तरफ़ को जाते हैं, यानी पैरों की उंगलियों से खिंचाव शुरू होता है और जब आंख के मुक़ाम तक पहुंच कर पुतली खिंचती हैं, तब मौत हो जाती है। अब ख़्याल करो

कि जिस रास्ते से सोते वक़्त धार सुरत की अंतर में खिंच जाती है, इसी रास्ते से मौत के वक़्त खिंचाव होता है, तो फिर यही रास्ता देह को छोड़ कर घर की तरफ़ जाने का ठहरा और उसी रास्ते से अंतर में पैदायश के वक़्त सुरत उंचे मुक़ाम से पिंड में उतर कर आई है, सो उसी रास्ते से मरते वक़्त पिंड को छोड़ कर जाती है ॥

२१—जो कोई देहियों के बंधन और उनके लाज़मी दुक्खों से और भी मौत की सख़्त तकलीफ़ से बचना चाहे उसको मुनासिब है कि इसी रास्ते से यानी आँख के मुक़ाम से चलने का जतन शुरू करे। और वह जतन सुरत शब्द मारग का अभ्यास है, यानी सुरत को धुन में जो घट २ में हर वक़्त हो रही है, लगा कर ऊपर को चढ़ावे, और जो शब्द की धुन है वही चेतन्य या जान की धार है। ख़ुलासह यह कि जिस धार पर सुरत उतरी है, उसी धार पर चढ़ कर उलटना, और जहां से वह धार आई है वहां पहुंचना चाहिये ॥

२२—अगर यह कार्रवाई नहीं की जावेगी, और संसार के कारोबार और भोग बिलास में गी, तो इस स्वभाव और संसारी आसा

कि जिस रास्ते से सोते वक़्त धार सुरत की अंतर में खिंच जाती है, इसी रास्ते से मौत के वक़्त खिंचाव होता है, तो फिर यही रास्ता देह को छोड़ कर घर की तरफ़ जाने का ठहरा और उसी रास्ते से अंतर में पैदायश के वक़्त सुरत उंचे मुक़ाम से पिंड में उतर कर आई है, सो उसी रास्ते से मरते वक़्त पिंड को छोड़ कर जाती है ॥

२१—जो कोई देहियों के बंधन और उनके लाज़मी दुक्खों से और भी मौत की सख़्त तकलीफ़ से बचना चाहे उसको मुनासिब है कि इसी रास्ते से यानी आँख के मुक़ाम से चलने का जतन शुरू करे। और वह जतन सुरत शब्द मारग का अभ्यास है, यानी सुरत को धुन में जो घट २ में हर वक़्त हो रही है, लगा कर ऊपर को चढ़ावे, और जो शब्द की धुन है वही चेतन्य या जान की धार है। ख़ुलासह यह कि जिस धार पर सुरत उतरी है, उसी धार पर चढ़ कर उलटना, और जहां से वह धार आई है वहां पहुंचना चाहिये ॥

२२—अगर यह कार्रवाई नहीं की जावेगी, और संसार के कारोबार और भोग बिलास में गी, तो इस स्वभाव और संसारी आसा

और बासना के मुवाफ़िक, बाद मरने के फिर देह धारन करनी पड़ेगी, और जो दुख सुख कि देही के साथ लाज़मी हैं। उनका भोग करना पड़ेगा और मौत के वक़्त का भारी कष्ट सहना पड़ेगा, और यह चक्कर कभी बन्द नहीं होगा ॥

२३—सिवाय सुरत शब्द मारग के और कोई जुगत या जतन या अभ्यास, वास्ते उलटाने सुरत के और पहुंचाने उसके निज घर में रचा नहीं गया यानी सिर्फ़ शब्द की धार को पकड़ करके सुरत धुरपद में पहुंच सक्ती है क्योंकि आदि में शब्द प्रघट हुआ और बाक़ी रचना शब्द की धार से पैदा हुई इस वास्ते जो कोई शब्द का भेद लेकर और उसकी धार को पकड़ के घट में चलेगा, वही कुल्ल मालिक के चरनों में जहां से आदि शब्द प्रघट हुआ पहुंच सक्ता है और जो कोई और किसी धार को पकड़ के चलेगा, वह माया के घेर में रहेगा, क्योंकि और सब धारें चेतन्य और माया की मिलौनी से जारी हुई हैं और यह सब धारें शब्द की धार के जो रूह और जानकी धार है आधीन और ताबेदार हैं, और [illegible] की शक्ती से चेतन्य और क़ायम हैं, और [illegible] कारवाई कर रही हैं। जो रूह यानी शब्द की

जावे, तो और सब धारें बेकार हो जाती हैं बल्कि उनका अभाव हो जाता है, यानी जब तक कि रूह की धार वापिस न आवे, तब तक और धारें गुप्त और बेकार हो जाती हैं ॥

२४—शब्द की धार से मतलब चेतन्य की धार से है, क्योंकि शब्द चेतन्य का ज़हूरा और निशान है और उसका भेद सिर्फ़ सन्तों या उनके प्रेमी सेवकों के पास है। और आज कल राधास्वामी संगत में उसका अभ्यास जारी है, जो कोई सच्चा खोजी या दर्दी होवे, वह वहां से उपदेश लेकर और अभ्यास शुरू करके अपने जीव का काज बना सक्ता है। और जो कोई बाहर मुख परमार्थ की कार्रवाई कर रहे हैं या करेंगे, उनको शुभ करम का फल कुछ सुख मिल सक्ता है पर जीव का उद्धार यानी जनम मरन से बचाव हरगिज़ नहीं हो सक्ता ॥

———

बचन--२६

१ रचो २ भजो ३ हटो ४ तजो ५ मरो ६ जीवो और ७ बसो ॥

(गुरु के रंग रचो) (गुरु का नाम भजो) (जगत से हटो) (देह का मोह तजो) (शब्द में मरो) (अमर होके जीवो) (अमर धाम में बसो)

१—इस लोक में मौत का बाज़ार बड़ा गरम है, कोई जीव इस्से बच नहीं सक्ता चाहे कैसाही जतन करो ॥

२—जब तक देह और कुटम्ब परवार और इस लोक के भोगों और पदार्थों में मोह और उन्हीं की आसा और बासना मन में रहेगी, तब तक सिर्फ़ एक बार नहीं बल्कि बारम्बार जनमना और मरना पड़ेगा, और मौत का भारी कष्ट और कलेस हरबार सहना पड़ेगा ॥

३—जो कोई इस कष्ट और कलेश से बच और अमर धाम में पहुंच कर परम आनन्द होना चाहे, तो इस बात के हासिल सिर्फ़ एकही जतन है और वह यह

संत सतगुरु का खोज लगा कर उनके सतसंग में शामिल होवे, और बचन सुन कर उनके चरनों में प्रेम प्रीत करे ॥

४—और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम का, और भी रास्ते और मंज़िलों का भेद और चलने के तरीक़े का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करे ॥

५—संत सतगुरु उपदेश के वक़्त गुरु स्वरूप के ध्यान की और घट में शब्द के सुन्ने की हिदायत करेंगे, यही शब्द धुन्यात्मक नाम और गुरू और मालिक का नाम कहलाता है। इस में तवज्जह करने से नाम के अभ्यास की बहुत जल्द तरक्की होगी, यानी मन और सुरत घट में सिमटेंगे, और परमधाम की तरफ़ चढ़ना शुरू करेंगे ॥

६—जो थोड़ा बहुत रस अंतर में मिलना शुरू होगा तो संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत जागेगी, और दूसरों के मन में भी यह हाल सुनकर, इसी काम यानी अभ्यास करने का शौक़ पैदा होगा। और वे भी सतसंग में शामिल होकर, संत सतगुरु की दया का फ़ायदह उठावेंगे ॥

७—जब अभ्यासी को घट में दया और रक्षा के

परचे मिलने शुरू होंगे, तब उसके मन में प्रेम संत सतगुरु के चरनों का बढ़ेगा, और उनके रंग में रच जावेगा, और उमंग के साथ उनके नाम को भजेगा यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास शौक़ के साथ करेगा ॥

८—जिस क़दर यह कैफ़ियत और हालत बढ़ती जावेगी, उसी क़दर अभ्यासी का चित्त संसार और उसके भोगों और पदार्थों की तरफ़ से हटता जावेगा और परमार्थी अनुराग की दिन २ तरक़्क़ी होती जावेगी यहां तक कि लोक लाज और मोह जाल के बंधन ढीले होते जावेंगे, और भक्ती अंग और भक्ती रीत में बेतकल्लुफ़ और बग़ैर झिझक के बर्ताव करेगा ॥

९—ऐसे अभ्यासी को यह दुनिया धोखे की जगह नज़र आवेगी, और उस में भाव और प्यार घटता और दूर होता जावेगा, और सतसंग और संत सतगुरु और प्रेमी जन प्यारे लगेंगे, और राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुंचने का इरादा तेज़ और मज़बूत होता जावेगा ॥

१०—जिस क़दर अभ्यास यानी ध्यान और भजन में, मन और सुरत सिमटते और सरकते जावेंगे उसी क़दर देह और कुटम्ब का मोह और उस के बंधन

कम और ढीले होते जावेंगे, और सुरत के चढ़ाई का शौक़ और अभ्यास तेज़ होता जावेगा ॥

११—जब दया से इस क़दर अभ्यास बढ़ेगा, कि मन और सुरत चढ़कर तीसरे तिल में और उसके पार पहुंचेंगे, तब वे मौत और काल के मुक़ाम से गुज़र जावेंगे यानी मर कर जी उठेंगे। और उन को इस क़दर ताक़त हासिल हो जावेगी, कि चाहे जब ऊपर की तरफ़ को सैर करें और चाहे जब देह में उतर आवें। इसी का नाम काल और मौत का जीतना है ॥

१२—यह काम जल्दी का नहीं है, सहज २ संत सतगुरु की दया और नित्त के अभ्यास से दुरुस्त बनेगा और मन और सुरत को ऊँचे देश में चढ़ने और ठहरने की ताक़त हासिल होवेगी ॥

१३—जो कोई अपने तन मन धन को सतगुरु पर वारे, और प्रेम प्रीत उनके चरनों में करे, उसी को सच्चा बैराग संसार और उसके सामान की तरफ़ से हासिल होवेगा। और वही सच्चा अनुराग कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में करेगा, और उसी की हालत अंतर अभ्यास में बदलती जावेगी, यानी उसके मन और सुरत सिमटते और घर की तरफ़ चढ़ते जावेंगे। फिर उसी का देह और इंद्रियाँ और

मन रूपी आपा शब्द में तीसरे तिल के मुक़ाम और उसके परे पहुंचने पर मर जावेगा, यानी यह आपा तीसरे तिल में और कुछ उसके नीचे रह जावेगा, और सुरत और निज मन चेत कर ऊपर चढ़ेंगे ॥

१४—फिर वहां से त्रिकुटी में पहुंच कर निज मन भी रह जावेगा, और सुरत न्यारी होकर छुड़ी अपने निज घर की तरफ़ चलेगी, और संत सतगुरु की मेहर और दया से अमर लोक में पहुंच कर बासा पावेगी और अमर आनंद को प्राप्त होवेगी ॥

१५—जब तक इस तौर पर कार्रवाई न की जावेगी तब तक जीव का सच्चा कल्यान नहीं होगा, यानी किसी न किसी क़िस्म की देही के साथ बंधन और दुख सुख और जनम मरन का चक्कर नहीं मिटेगा इस वास्ते सब जीवों को चाहिये, कि संत सतगुरु का खोज करके उनके सतसंग में शामिल होवें और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर, जिस क़दर बन सके अभ्यास करें। और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ करें, तो वे दया करके सब भांत बचावेंगे, और एक दिन दयाल देश में बासा देंगे, जहाँ हमेशह को सुखी हो जावेंगे ॥

बचन-२७

निरखो और छोड़ो, परखो और पकड़ो (दुनियां का हाल नाश मान्ता का निरख कर उसको मन से छोड़ते जाओ) (और सत्त की अंस जो यहाँ मौजूद है उसकी परख करो और पकड़ के सत्त सिंध से मिलो)

१—जो कोई नज़र ग़ौर और बिचार से इस दुनिया और उसके समान और हाल को देखे, उसको मालूम होगा कि सब कारख़ानह और सुख और आनंद यहां का नाश मान है। और चाहे जिस क़दर मिहनत और कोशिश करके, चाहे जितना सामान और दौलत कोई जमा करे, वह सब एक दिन छोड़ना पड़ेगा॥

२—इसी तरह नेक नामी और शुहरत और इज़्ज़त इस लोक की ठहराऊ नहीं है, उसके हासिल करने के लिये पचना और खपना और जान देना अपनी उमर और चेतन्यता यानी जान को ओछी पूंजी और थोड़े फ़ायदह के लिए ख़र्च करना है॥

३—परमार्थी हिसाब में वह शख़्स अक़्लमंद और बिचारवान और बड़भागी समझा जाता है कि जो अपने तन मन धन और उमर को कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की भक्ती, और उनके दर्शनों की प्राप्ती के निमित्त ख़र्च करे ऐसी कार्रवाई से उसको बग़ैर मांगे बड़ाई और शुहरत इस लोक में, और परम आनंद और अमर अस्थान बाद छोड़ने इस देह और देश के प्राप्त होगा, और देहियों के साथ दुख सुख का भोग और जनम मरन का चक्कर क़ितई दूर हो जावेगा। यह फ़ायदा संसारी कार्रवाई से चाहे वह किसी क़दर मिहनत और कोशिश और धन ख़र्च करके की जावे हासिल नहीं हो सक्ता है ॥

४—जो कोई रसमी यानी संसारी परमार्थ की कार्रवाई करे, उससे भी उस फ़ायदा का हासिल होना जो ऊपर लिखा गया है, यानी सत्तपुर्ष राधास्वामी देश में वासा, और अमर आनंद का प्राप्त होना मुमकिन नहीं है ॥

५—रसमी और संसारी परमार्थ से मुराद उन मतों की कार्रवाई से है, कि जो संत अथवा राधास्वामी मत से अलहदह इस संसार में जारी हैं। और जिनमें कुल्ल मालिक सतपुर्ष राधास्वामी दयाल और उनके

धाम का पता और भेद और तरीक़ा चढ़कर पहुंचने का उस धाम में और हासिल करने दर्शन कुल्ल मालिक का पाया नहीं जाता है ॥

६—संतमत के मुवाफ़िक़ जब तक कार्रवाई नहीं की जावेगी, तब तक असली सत्त पद में पहुँचना मुमकिन नहीं है, और न उस सत्त सिंध की अंस यानी सुरत की परख और पहिचान आवेगी, जिसके आसरे तमाम रचना पिंडों की ठहरी हुई और कार्र-वाई कर रही है ॥

७—बड़ भागी वही जीव है कि जिसको संतों का सतसंग मिलगया। उनके दर्शन और बचन से नित्त आँख खुलती चली जावेगी। और इस दुनिया का हाल कि धोखे के मुक़ाम है अच्छी तरह समझ में आवेगा और कुल्ल मालिक और उसके धाम की महिमां बखूबी मालूम पड़ेगी तब यह शख़्स संसार और उसके सामान और कारोबार को ओछा और नाशमान यक़ीन करके निज धाम में पहुँचने और कुल्ल मालिक का दर्शन करने का इरादा सच्चा और पक्का करके जो जुगत कि सुरत शब्द मारग की राधास्वामी मत में समझाई है, उसका अभ्यास शौक़ के साथ शुरू करेगा और संत सतगुरु की दया से एक दिन कारज

उसके जीव का दुरुस्त बन जावेगा, यानी परम धाम में बासा पावेगा ॥

८—दुनिया और उसके सामान और भोग बिलास का छोड़ना आसान नहीं है। बसबब जीव के जन-मान जनम से बर्ताव करने और फँसे रहने के संसार में मन और इंद्रियों का यही स्वभाव पड़ गया है कि भोगों में लिपटे रहते हैं, और उन्हीं की बारम्बार चाह उठाते हैं और जतन करते हैं इस वजह से मन कभी संसारी करतूत और ख़्यालों से ख़ाली नहीं रहता। जब कभी परमार्थ के बचन सुनता है, उस वक़्त वे किसी क़दर अच्छे मालूम होते हैं लेकिन जब वहां से अलहदह हुआ या बचन मौक़ूफ़ हुये, तब फ़ौरन संसारी ख़्याल और गुनावन पैदा होकर उसकी तवज्जह को फिर संसार में खींच कर लगा देते हैं ॥

९—यह स्वभाव मन और इंद्रियों का जब तक कि संत सतगुरु और प्रेमी जनका संग, कुछ अर्से के वास्ते नित नहीं मिलेगा, तब तक बदला नहीं जावेगा। इस वास्ते सच्चे प्रेमी को मुनासिब है कि पहिले कोई दिन संत सतगुरु का संग करके अपनी समझ बूझ और ख़्याल और पकड़ और स्वभाव को बदलवावे और भक्ती की रीत और बर्तावा, और संसार से

किसी क़दर बैराग की चाल ढाल, और प्रेम की हालत को अपने हिरदे में बसावे और उसी मुवाफ़िक़ प्रेमी जनके संग बर्ताव शुरू करे, तब मन और इंद्रियाँ थोड़े बहुत सीधे चलेंगे, और किसी क़दर सफ़ाई और थिरता यानी निश्चलता हासिल करेंगे, और अन्तर अभ्यास में सुरत शब्द मारग के लगेंगे ॥

१०-इस तरह कार्रवाई करने से हालत जल्द बद-लेगी, और कुछ पहिचान सुरत और शब्द की आ-वेगी, और शौक़ सतसिंध में पहुँचने का बढ़ेगा और संत सतगुरु की मेहर से एक दिन सुरत चढ़कर निज पद में बासा पावेगी और परम आनन्द को प्राप्त होगी ॥

बचन-२८

१ समेटो और चढ़ाओ, मत बिखेरा और मत उतारो (मन और सुरत को समेटो और चढ़ाओ) (और उनको फ़ज़ूल मत बिखेरो और मत उतारो)

१—मन और सुरत देह में और भी संसार में बिखर रहे हैं, और अनेक जगह इनका बंधन हो रहा है, कि जिसके सबब से दुख सुख सहते हैं ॥

२–ऐसे ही मरने के वक़्त मन और सुरत को, इस देह के छोड़ने में निहायत दरजे की तकलीफ़ होती है, और कोई उस वक़्त सहायता नहीं कर सक्ता। जो कोई देह के संग जो दुख सुख व्यापता है, और मौत के वक़्त जो सख़्त तकलीफ़ होती है उनसे बचना चाहे, तो उसको मुनासिब है कि आहिस्ते २ अपनी बैठक बदले, यानी जो जाग्रत के वक़्त सुरत का आंखों में बासा है वहां से राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करके, उसको ऊपर यानी निज घर की तरफ़ चलावे ॥

३–इस कार्रवाई से दोनों मन और सुरत का सिमटाव होगा, और आंख के अस्थान से हटकर ऊपर की तरफ़ चढ़ेंगे। इस तौर से उनका फैलाव और बिस्तार संसार में कम होता जावेगा, और बंधन भी ढीले होवेंगे, कि जिसके सबब से दुनिया और देह का दुख सुख कम ब्यापेगा ॥

४—यह अभ्यास मन और सुरत को समेटने और चढ़ाने का अख़ीर वक़्त में यानी मौत के समय बहुत कुछ मदद दुख सुख के भुलाने और मौत का असर न ब्यापने में देगा। यानी जिस सिमटाव और खिंचाव को यह शख़्स अभ्यास के वक़्त रोज़मर्रह ज़ोर देकर

चाहता रहता है, यह अख़ीर वक़्त पर मौज से सर्ब अंग करके होवेगा, और तब शब्द भी खुलेगा और रूप भी दरसेगा, और निहायत दरजे का आनंद प्राप्त होवेगा ॥

५—यह तरकीब समेटने और चढ़ाने मन और सुरत की, सुरत शब्द मारग के अभ्यास से सिर्फ़ राधास्वामी मत में जारी है, जो कोई अपना सच्चा उद्धार यानी बारम्बार देह धारन करने और छोड़ने से बचना चाहे, उसको चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर सतसंग और अभ्यास करे। तब कोई दिन में उसको वह कैफ़ियत और हालत जिसका ज़िकर ऊपर किया गया है मालूम होवेगी ॥

६—फिर जिस क़दर प्रीत और प्रतीत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में, और भाव और प्यार संत सतगुरु में बढ़ता जावेगा, उसी क़दर चढ़ाई ज़्यादह बढ़ती जावेगी, और अंतर में रस और आनंद विशेष आवेगा, और देह और दुनिया से आहिस्ते २ छुटकारा होता जावेगा ॥

७—परमार्थी अभ्यासी को मुनासिब है कि बहुत बखेड़ों के काम में न पड़े, और न फ़ज़ूल चाह अपने बिस्तार और नामवरी की इस दुनिया में उठावे,

क्योंकि ऐसी चाहें जीव को हमेशा करम में बाँधे रखती हैं, और इस तरह कभी निःकर्म नहीं होवेगा ॥

८–जिस क़दर कार्रवाई मन और इंद्रियों की बाहर-मुख ज़्यादह होगी, उसी क़दर मन और सुरत बाहर बिखरेंगे और सिमटाव कम होगा इस वास्ते मुनासिब है कि जो कोई सच्चा परमार्थ कमाना चाहे, वह सिर्फ़ ज़रूरी और मुनासिब कार्रवाई देह और घर बार और रोज़गार की करे, और फ़ज़ूल और बेफ़ायदा और बेमतलब अपना वक़्त इस क़िसम के कामों में ख़र्च न करे ॥

९—अलावह इसके उसको मुनासिब है, कि दो तीन बार अभ्यास समेटने और चढ़ाने अपने मन और सुरत का दिन रात में, जिस क़दर दुरुस्ती के साथ बने करता रहे, तो उसको यह फ़ायदा हासिल होगा, कि जिस क़दर मन और सुरत बाहरमुखी कार्रवाई के सबब से उतरेंगे या फैलेंगे, उसी क़दर कामोबेश सिमट आवेंगे, और अपने ठिकाने और निशाने पर जा पहुंचेंगे। बल्कि प्रेमी जन के सुरत और मन रोज़ बरोज़ सिमटाव और चढ़ाई में थोड़ी बहुत तरक़्क़ी करेंगे, कि जिस्से मुक़ाम मन और सुरत के चढ़ाई का ऊंचे की तरफ़ को ज़्यादह बदलता और बढ़ता जावेगा ॥

१०—जिस क़दर कि अभ्यास के वक़्त मन और सुरत का सिमटाव और चढ़ाई होती जावेगी उसमें में किसी क़दर अंग मन और सुरत का ऊंचे देश में आहिस्ते २ बस्ता जावेगा, और तब वक़्त अभ्यास के बाक़ी अंग को समेटने और चढ़ाने में बहुत दिक़्क़त न होगी ॥

११—लेकिन यह हालत सच्चे और गहरे प्रेमी सतसंगी की होगी, और उसी से अभ्यास इस क़दर दुरुस्ती से बन पड़ेगा, कि जिस्से सिमटाव और चढ़ाई मन और सुरत की, ऊंचे देश की तरफ़ थोड़ी बहुत आहिस्ते २ होती जावेगी ॥

१२—ऐसे प्रेमी सतसंगी को आप फ़ायदा चढ़ाई का, और किसी क़दर मन और सुरत के अंग का ऊंचे देश में बस जाने का नज़र आवेगा । और वह अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ इस बात की बड़ी अहतियात रक्खेगा, कि उसके मन और सुरत फ़ज़ूल और बेफ़ायदा उतरने और बिखरने न पावें । और वह ध्यान का अभ्यास थोड़ा २ यानी पांच सात या दस मिनट दिन रात में दस बारह दफ़े करता रहेगा, कि जिस्से हालत सिमटाव और चढ़ाई की थोड़ी बहुत बराबर बनी रहेगी और दुनिया और देह और रोज़गार की कार्रवाई भी बख़ूबी जारी रहेगी । और यह हालत ऐसे प्रेमी

अभ्यासी की कोई शख़्स समझ और परख नहीं सकेगा, लेकिन संत सतगुरु और बराबर के प्रेमीजन से यह हालत छिपी नहीं रह सक्ती ॥

१३—दुनिया के भोग और बिलास में मन और इंद्री जल्द उतर कर लिपट जाते हैं, और उधर ही तरक़्क़ी चाहने की वजह से, उनका उतार और फैलाव देह और दुनिया में बहुत जल्द और कसरत से हो जाता है। पर दुनिया के लोग और रसमी परमार्थ की कार्र-बाई करने वाले इस हाल से बेख़बर हैं, और अपने नुक़सान का कुछ इलाज नहीं सोचते और नहीं करते हैं। बल्कि कुछ रस और मज़ा मन और इन्द्रियों का पाकर दिन २ उसी में लिपटते और गिरते और बिखरते चले जाते हैं, यहाँ तक कि फिर जो कोई उपदेश चढ़ाई का करे और जुगत बतावे, तो उसको बिलकुल नहीं सुनते। बल्कि उलटे संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की निंदा करते हैं, और आप और अपने संगियों को दर्शनों से संत सतगुरु के दूर हटाये रखते हैं और नतीजा उसका यह होता है, कि ज़िंदगी में और भी मौत के वक़्त सख़्त तकलीफ़ और महा दुक्ख सहते हैं, और फ़िर जनम मरन का चक्कर जारी रहता है ॥

बचन-२९

१ बचो, २ सजो, ३ चलो, ४ और मिलो ॥ (संसार और उसके भोग बिलास और मान बड़ाई से बचो) (सतसंग में बैठ कर अपने मन और सुरत को सजो यानी उनका सिंगार करो) (और फिर घट में धुन के संग चलो) (और अपने सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल से मिलो)

१—इस दुनिया में निज मन यानी काल पुर्ष और माया ने, बहुत से पदार्थ और भोग वास्ते लुभाने, और फँसाने जीव के, और बहुतसी डोरियां कुटम्ब परवार और रिश्तेदारी की, वास्ते उसके बांधने के रचे हैं, और जीव अजान उन में फँस गया और बंध रहा है ॥

सिवाय इसके अनेक तरह की तरंगें और ख़्वाहशें
होती रहती हैं, कि जिनके सबब से जीव

हमेशह करम के चक्कर में पड़ा रहता है, और पाप पुन्य का भागी होता है ॥

३—ऐसे तौर से कार्रवाई दुनिया की जारी की है, कि कुल्ल जीव क्या अमीर क्या ग़रीब क्या औरत क्या मर्द हमेशह धंधे में लगे रहते हैं। और जब बाहर के कामों से थोड़ी देर को फ़ुर्सत होती है, तब अंतर में अनेक तरह के ख़्याल उठाते रहते हैं, और आसा और त्रिश्ना की लहरों में बसते रहते हैं ॥

४—खुलासह यह कि जीवों को बहुत कम फ़ुर्सत अपने आपे और अपने मालिक की निसबत खोज और बिचार करने की मिलती है, और उस में भी सच्ची तवज्जह वास्ते लगाने सच्चे खोज के नहीं आती है। और न कोई सच्चा भेदी जिस्से मुफ़स्सिल हाल सच्चे मालिक के धाम, और उसके रास्ते और मंज़िलों का, और तरकीब चलने और रास्ता तै करने की मालूम पड़े मिलता है ॥

५—दुनियां का हाल नाशमानता का साफ़ आंख से नज़र आता है, और जीव भी जो पैदा होते हैं, वे भी बाद कार्रवाई चंद रोज़ा के गुज़रते चले जाते हैं और अख़ीर में सिवाय हसरत और अफ़सोस के
के साथ कुछ नहीं जाता। और यह भी देखने

है कि देह धर कर कोई जीव दुख सुख भोगने से ख़ाली नहीं रहता, और अख़ीर वक़्त यानी मौत के समय निहायत कष्ट और कलेश हर एक को सहना पड़ता है। जैसा कि मरने के वक़्त की हालत और बाद मरने के रंग रूप बिगड़ जाने ... ज़ाहिर होता है ॥

२— ... मन में पैदा हु...

... हालत और कैफ़ियत देख कर भी जीवों ... तहक़ीक़ात का इस मुआमले में नहीं ... भूल और ग़फ़लत इस क़दर बढ़ी हुई ... इस मुआमले की निसबत गुफ़्तगू ... और न कुछ हाल उसका सुन्ना ... मिलना नामुमकिन है, और मालिक ... में ऐसा ... में पहुंच कर मिल सका है। न कोई का पता ... को ... नाम पहिन कर अनेक तरह के ... फिर उससे ... जाती और उनके साथ बहुत क़िस्म की धोखे ... लोगों ... गैर कार्रवाई अभ्यास के सबब से जीवों को अक्सर ... और गुफ़्तगू करने वालों ... मुआमले में तहक़ीक़ात ... फ़ज़ूल ... भी गई ॥

... जीवों के वि...

८—इस सबब से पूरी तवज्जह कुल्ल जीवों की दुनिया और उसके सामान और भोग बिलास और मान बड़ाई हासिल करने के लिये ख़र्च होने लगी, और परमार्थी कार्रवाई रसमी और ठेकियों की सी रहगई ॥

९—बहुत से लोग परमार्थी रसमों को इस ख़ौफ़ से जारी रखते हैं, कि कहीं उनके क़बायल[1] की तनदुरुस्ती, और उनके पेशे की आमदनी और ख़ानदानी इज़्ज़त और आबरू में ख़लल न पड़े क्योंकि रोज़गारियों ने उनको इसी क़िसम का डर दिखाया कि अगर पुरानी रसमों को जारी न रक्खेंगे तो नुक़सान होगा ॥

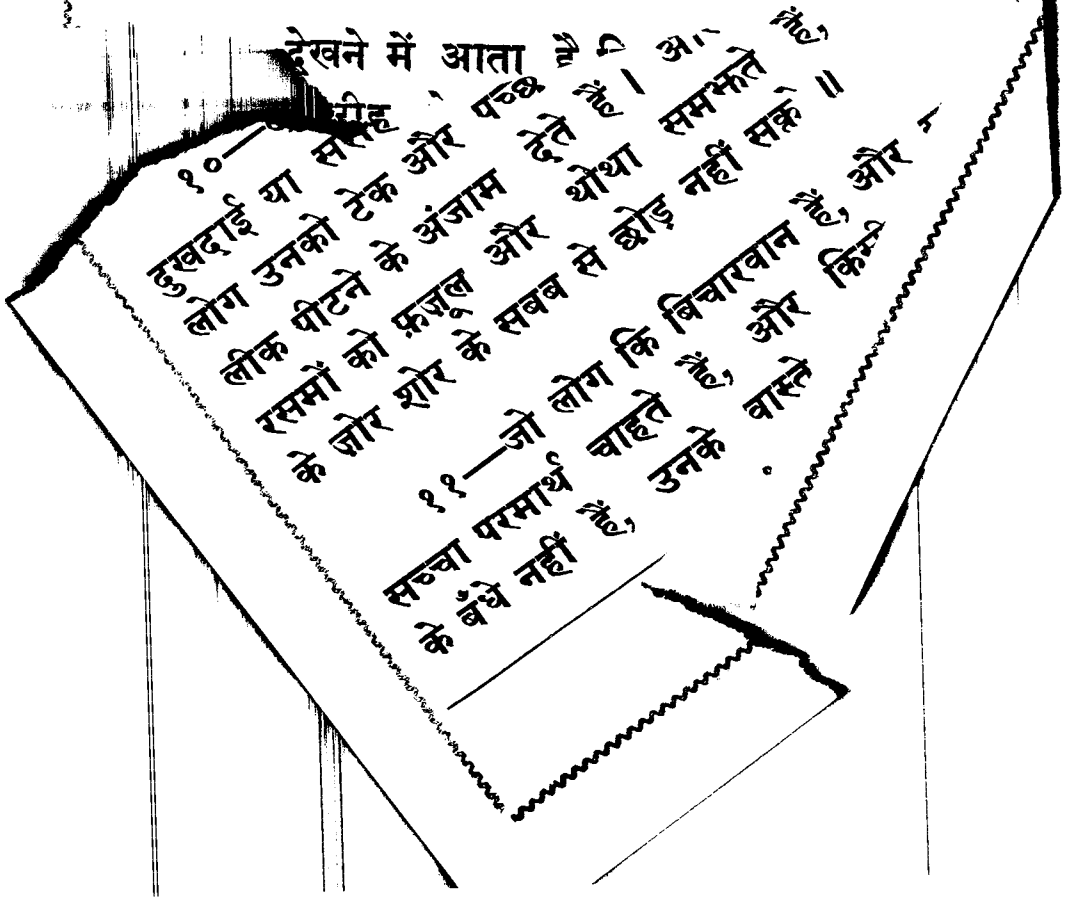

है कि पहिले संत सतगुरु का खोज करो, और उनके सत संग में प्रीत और दीनता और शौक़ के साथ रलो और मिलो तब स्वार्थ और परमार्थ की सच्ची ख़बर पड़ेगी ॥

१२—इन दिनों में सच्चे और कुल्ल मालिक का भेद और उसके निज धाम का रास्ता और चलने की जुगत का हाल मुफ़स्सिल तौर से राधास्वामी संगत में मालूम हो सक्ता है। जो सच्चा खोजी और दर्दी है, उसको चाहिये कि उस संगत में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर अभ्यास शुरू करे, और दुनिया के जाल में न फंसे यानी भोग बिलास और मान बड़ाई और धन और माल की चाह औसत दरजे की (जिसमें अपना और कुटुम्ब का गुज़ारा हो जावे) उठावे, और फ़ज़ूली और ज़्यादती न करे ॥

१३—इस तरह संसार और उसके बखेड़े से बचे और सतसंग में बैठ कर और संतों के बचन और बानी को सुनकर, बिचार के साथ उनके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करे, तब सहज में संसार से निबेड़ा होता जावेगा, और उसी क़दर मन और सुरत संत सतगुरु की दया से अभ्यास में लगेंगे ॥

१४—मन के अंतर बहुत बिकार और नाक़िस स्वभाव धरे हैं, और दस इंद्री और पांच दूत (काम क्रोध, लोभ, मोह, और अहंकार) का इस में भारी ज़ोर और शोर है। सो यह सब सफ़ाई और इनके ज़ोर का घटाव, संत सतगुरु की दया और उनके सतसंग और उपदेश की कमाई से मुमकिन है। इसी को सुरत और मन का सजना और सिंगार कहते हैं ॥

१५—जब दुनिया और उसके सामान की तरफ़ से चित्त में किसी क़दर बैराग होगा, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रेम और अनुराग पैदा होगा तब ऊंचे देश की तरफ़ चलना यानी रास्ता तै करना शुरू होगा ॥

१६—जो मेहर और दया से इस तौर से कार्रवाई जारी रही, यानी संसार से उदासीनता और चरनों में प्रीत और प्रतीत आहिस्तह २ बढ़ती गई, तो एक दिन ऐसा प्रेमी अभ्यासी धुर धाम में पहुंच कर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन हासिल करेगा और उसी धाम में बिश्राम पाकर अमर आनंद को प्राप्त होगा और देहियों के बंधन और उनके दुख सुख और जनम मरन के कष्ट और कलेश से क़ितई छुटकारा हो जावेगी ॥

बचन-३०

दुनिया में ज़रूरत के मुवाफ़िक़ दिल लगाना और बाक़ी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत जोड़ना चाहिये और जो रास्ता कि मालिक ने घट में चलने और चढ़ने का निज घर की तरफ़ दिखा रक्खा है, उस पर जीते जी चलना चाहिये, ताकि एक दिन निज घर में पहुंच कर और बिश्राम पाकर परम आनंद को प्राप्त होवे, और जनम मरन और दुख सुख के चक्कर से बच जावे ॥

१—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल सर्व समर्थ कुल्ल करतार घट २ अंतरजामी परम पुर्ष पूरन धनी हैं, और जीव उनकी अंस है, जैसे सूरज और सूरज की किरन ॥

२—कुल्ल रचना आदि सुरत या आदि धार ने, जो राधास्वामी दयाल के चरनों से प्रघट हुई, करी है और जितने पिंड या देही हैं वह सुरतों ने रचे हैं और उनमें बैठ करके कार्रवाई हर एक देह की कर रही हैं ॥

३—सुरत की बैठक पिंड में आंख के मुक़ाम पर है, और अथूस्ल और सूक्षाम और कारन शरीर में, हर रोज़ जागते और सोते वक़्. फेरा रहता है और जब एक शरीर से दूसरे में गुज़र होता है, तब पहिले की कार्रवाई बंद हो जाती है, और वहां का दुख सुख और चिन्ता और फ़िक्र सब हवा हो जाता है। और जब फिर सुरत की धार लौट आती है, तब वह शरीर बदस्तूर चेतन्य हो जाता है यानी कार्रवाई उसकी जारी हो जाती है ॥

४—यह हालतें ज़ाग्रत और सुपन और गहरी नींद की, जो हर एक जीव पर हर रोज़ गुज़रती हैं साफ़ साबित करती हैं कि अस्थूल सूक्षम और कारन शरीर सुरत के ख़िलाफ़ हैं, और माया के मसाले से बने हुए और जड़ हैं, और सुरत चेतन्य की धार से अपनी चेतन्यता ले रहे हैं, यानी उसकी ताक़त से कार्रवाई कर रहे हैं, और सुरत चेतन्य इनसे और

इनके मसाले से अलहदा है क्योंकि जब सुरत इन सब से जुदा हो जाती है, जैसे सकते या सुन्नपात की बीमारी में या मौत के वक़्त तब यह शरीर बदस्तूर सही और सालिम बने रहते हैं, लेकिन महज़ बेकार और मुर्दे ॥

५—जब कि तीसरे दरजे यानी पिंड देश में, सुरत कुल्ल की चेतन्य करने वाली और शरीरों से न्यारी है तब ब्रहमान्ड यानी दूसरे दरजे में भी इसी तरह से उन तीनों रूप से जो परमेश्वर यानी ब्रह्म ने धारन किये हैं वह जुदा है। और पिंड और ब्रहमान्ड के परे अव्वल दरजे में, जो संतों का निज देश और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का निज धाम है, सुरत का निज घर है, और वहीं यह अपने अंसी कुल्ल मालिक से मिल कर परम आनंद को प्राप्त हो सक्ती है ॥

६—जो जीव यानी सुरतें इस लोक में देह और कुटम्ब परवार और संसार के भोग बिलास में बांध गईं और रच गई हैं, और इन्द्री रस और भोगों के हासिल करने के लिये धन पैदा करने में, अपनी तमाम उमर ख़र्च कर रही हैं, और इस जड़ देही को ही अपना रूप समझा है, वे अपनी चाह और बासना के मुवाफ़िक़ बाद मरने के फिर जनमेंगी और देह

धारन करेंगी, और देह के साथ जो दुख सुख का भोग लाज़मी है वह जब तब अपनी उमर में भोगती रहेंगी, और अख़ीर वक़्त यानी मौत के समय महा कष्ट और कलेस उनको सहना पड़ेगा। जैसा कि मरने वालों की हालत से ज़ाहर है ॥

७—अब संत सतगुरु जो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के निज मुसाहब और निज पुत्र हैं और संसार में जब तब देह धारन करके वास्ते उद्धार और उपकार जीवों के प्रघट होते हैं, इस तौर पर फ़रमाते हैं कि कुल्ल मालिक राधास्वामी जीवों पर इस क़दर दयाल हैं, कि जहां वह जाते हैं यानी पैदा होते हैं उनके अंग संग रहते हैं और कृपा करके उनको रास्ता उद्धार का या उलट कर उनके निज धाम में जाने का हर एक के घट में साफ़ दिखला दिया है, यानी जिस रास्ते पर सोते वक़्त हर रोज़ जाते हैं, या मरने के वक़्त गुज़र करते हैं, वही ठीक रास्ता घर जाने का है। और जिस क़दर कि सुरत आंख के मुक़ाम से सरकती जाती है उसी क़दर देह और दुनिया की तरफ़ से अलहदगी होती जाती है, और दुख सुख उसका कम ब्यापता है ॥

८—जो जीव अपना सच्चा उद्धार और कुल्ल मालिक

के निज धाम में पहुंचना चाहें उनको मुनासिब है कि आंख के मुक़ाम से चलना शुरू करें। मगर इस रास्ते का हाल और चलने की तरकीब सिर्फ़ भेदी और वाक़िफ़कार गुरू से मालूम होगी, और सब इस भेद और हाल से बेख़बर हैं ॥

६—जो संत सतगुरु से मिलकर और उनकी दया से करनी करके धुर मुक़ाम तक पहुंचे हैं, या असल में वहीं से आये हैं, उनको सच्चा और पूरा गुरू और संत सतगुरु कहते हैं। और जो संत सतगुरु से मिलकर और उपदेश लेकर अभ्यास कर रहे हैं, और अभी ब्रह्म पद तक पहुंचे हैं, उनको साध गुरू कहते हैं। और जो संत सतगुरु या साध गुरू से मिलकर उपदेश कमा रहे हैं और घट में कुछ रास्ता भी तै किया है, उनको प्रेमी सतसंगी कहते हैं। जो कोई संत सतगुरु या साधगुरू से मिलेगा, उसका काम सर्व अंग करके दुरुस्त बन जावेगा, यानी उनकी दया लेकर रास्ता उसका घट में जारी हो जावेगा और एक दिन धुर मुक़ाम में पहुंच कर विश्राम करेगा। और जो कोई प्रेमी सतसंगी से मिलेगा, उसका भी काम आहिस्तगी के साथ दुरुस्त बन जावेगा, और मौज से उसको संत सतगुरु भी मिल जावेंगे ॥

१०—अब ग़ौर करना चाहिये कि इस लोक में जितने पदार्थ और भोग हैं, वह सब जड़ हैं और सुरत चेतन्य है, इसका और उनका आपस में मेल नहीं है। और जो कि वे और सुरत का देह रूप दोनों नाशमान हैं, और वास्ते आपस में मेल और मुहब्बत का फल सुख थोड़ा और दुख घनेरा होता है। इसी तरह कुटुम्ब परवार की मुहब्बत का हाल समझना चाहिये।

११—सच्चे परमार्थी को बिचार के साथ बर्ताव करना चाहिये, यानी इस क़दर बिशेष बंधन और प्रीत किसी में नहीं करना चाहिये, जिसमें दुख और कलेश पैदा होवे। और तवज्जह अपनी हमेशा चरनों में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के मज़बूत करना और बढ़ाना चाहिये, तब दुनिया के दुख सुख कम ब्यापेंगे, और अख़ीर वक़्त पर तकलीफ़ नहीं होवेगी, बल्कि ख़ुशी और आनंद प्राप्त होवेगा॥

१२—जो रास्ता घट में चलने और चढ़ने का आंख के मुक़ाम से मालिक ने दिखा रखा है, उस रास्ते पर चलने की जुगत संत सतगुरु या उनके प्रेमी सत संगी से दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करना मुनासिब

है, यानी अपनी सुरत को चेतन्य की धार में जो शब्द की धार है, जोड़ना और धुन के आसरे चढ़ाना चाहिये ॥

१३—सच्चे उद्धार और सच्ची मुक्ती और सच्चे मालिक के दर्शनों की प्राप्ती का यही एक जतन है। जो इसको यानी सुरत शब्द की कमाई नहीं करेंगे, वह अपनी ज़िन्दगी में और भी वक़्त मरने और बाद मरने के बहुत कष्ट और कलेश पावेंगे, और उस दुख में कोई उनकी सहायता नहीं कर सकेगा ॥

१४—सुरत शब्द मारग के संग कुल्ल मालिक और संत सतगुरु की दया हमेशा मौजूद रहती है, जो कोई यह अभ्यास करेगा उसको वह दया अपने घट में मालूम पड़ेगी, और दुख और कलेश के वक़्त हमेशा उसकी सहायता होगी और जो यह अभ्यास नहीं करेगा, वह काल और जमदूतों के हाथ से दुख और कष्ट सहेगा ॥

१५—यह अभ्यास ऐसा सहज है कि जो मन में थोड़ा प्रेम भी है, तो वह थोड़ा बहुत दुरुस्ती से बन पड़ेगा, और अपना फल अभ्यासी को दिखावेगा, यानी उसकी प्रीत और प्रतीत को आहिस्तह आहिस्तह बढ़ावेगा। और इस अभ्यास को लड़का जवान और

बूढ़ा और स्त्री और पुर्ष और ग्रहस्त और बिरक्त और पढ़ा हुआ और अनपढ़, थोड़े शौक़ के साथ बे तकलीफ़ कर सक्ते हैं। और इस कमाई से सहज वैराग दुनिया और उसके सामान की तरफ़ से आहिस्तह २ मन में पैदा होता जावेगा। जो कोई इस अभ्यास में लग जावे उसी को सच्चा परमार्थी और बड़भागी और मेहरी समझना चाहिये ॥

बचन--३१

चलो २ घरघंट पुकारे। रलोमिलो संग दयाल पियारे ॥

१—जब से कि सुरत उतर कर पिंड में आँख के मुक़ाम पर बैठी है, तब से सहसदल के मुक़ाम से बराबर घंटे की आवाज़ हो रही है, गोया इस सुरत को पुकार रही है, कि चलो और अपने घर की सुध लो पर सुरत की तवज्जह मन और इन्द्रियों के सबब से भोगों में, और कुटम्ब परवार और धन और माल में ऐसी ज़बर हो रही है, कि वह इस धुन की जो हर वक़्त घट में जारी है, ख़बर भी नहीं लेती ॥

२—कुल्ल जीव अपने निज घर और कुल्ल मालिक की तरफ़ से बेख़बर हैं, और हर चंद ज़मीनी और

आसमानी रचना छोटी और बड़ी और बहुत ख़ुशनुमा और सुहावनी और रंगारंग देखते हैं और जानते हैं कि यह काम मनुष्य का नहीं है, फिर भी कोई खोज उसके करता का नहीं करते, सिर्फ़ इतनी समझ लेकर कि कोई मालिक है निःचिन्त हो बैठे हैं ॥

३—सबब इस बेख़बरी और बेतवज्जही और बे-परवाही का साफ़ यह मालूम होता है, कि जो कि पिछले लोगोँ ने उस मालिक की सिफ़त अलख और अगम और अकह और अपार और अनंत कहा है सो जीबों ने इन नामों के यह अर्थ समझ कर, कि कोई उस मालिक को जान नहीं सक्का, और लख नहीं सक्का, और उसके पास पहुंच नहीं सक्का, और वह कहने में और समझने में आ नहीं सक्का, तहक़ीक़ात और दरियाफ़्त करने की कोशिश छोड़ दी। और इस सबब से सब के सब क्या विद्यावान और क्या अनपढ़ उस मालिक के पते और धाम के भेद से बे-ख़बर रहे ॥

४—जो कोई ज़्यादह खोज भी करे, तो उसको पंडित भेष मौलवी और शेख़ वग़ैरह नासतिक और काफ़िर कहकर हटा देते हैं, और अपनी नादानी और बेख़बरी के दूर करने का ज़रा भी जतन नहीं करते ॥

रहा है, यहां सदा आनंद ही आनंद है और कुल्ल रचना यहां की अमर है ॥

१०—कुल्ल मालिक परम पुर्ष पूरन धनी राधास्वामी महा दयाल हैं, और महा प्रेम और महा आनंद का भंडार हैं, और कुल्ल रचना के सच्चे माता पिता हैं। जो कोई उनके चरनों में प्रेम प्रीत करे, और दर्शनों की चाह उठाकर उनके धाम की तरफ़ चलना चाहे उसको चाहिये कि संत सतगुरू से मिलकर, और उनसे सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर चलना शुरू करे, तो एक दिन उनकी मेहर और दया से राधास्वामी धाम में पहुंच कर बासा पावेगा, और अमर आनंद को प्राप्त होगा ॥

११—जब तक कि कोई दयाल देश में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में नहीं पहुंचेगा, तब तक उसका सच्चा और पूरा उद्धार यानी काल और माया के जाल से क़ितई छुटकारा नहीं होगा, इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि अपने असली कल्यान के निमित्त, थोड़ा बहुत सतसंग संत सतगुरु या उनके प्रेमी जन का करें, और वहां उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर जिस क़दर बने अभ्यास करना करें, तो रफ़्ता २ दो तीन चार जनम में उनका [illegible] वहां

॥
जावे ॥
घर चढ़ जावे ॥

दुनिया और दुनियादारों के हाल मालूम होगा, कि जिस क़दर दुख हैं, और तीन ताप यानी मानसी दुख और उपाधी वग़ैरह का चक्कर चल रहा और मन के बंधन का फल है ॥

मसाले की मिलौनी और उसके रचे हुये पदार्थों के संग से बंधन पर बंधन पड़ते गये ॥

...हुआ अपने को आप नहीं खोल सका।

कलेश और जनम मरन का दुख नहीं है, और हमेशा आनंद ही आनंद रहता है ॥

११–ऐसे दर्दी और खोजी जीव को, संत सतगुरु ज़रूर मिलते हैं, और वह उनके बचन सुन कर निहायत मगन होता है, और प्रेम में भर कर उनकी और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ती निहायत उमंग के साथ करता है, और उपदेश लेकर सुरत शब्द मारग की कमाई बहुत शौक़ के साथ करता है ॥

१२–सुरत शब्द जोग से मतलब यह है, कि सुरत यानी रूह को, आवाज़ के वसीले से, जो घट २ में हरदम हो रही है, अंतर में लगाना और ऊंचे देश की तरफ़, जहां कुल्ल मालिक का धाम है, चढ़ाना–सिवाय इसके कोई दूसरा मारग निज घर में जाने का नहीं है। इसी अभ्यास से मन और इंद्रियां थोड़े बहुत क़ाबू में आवेंगे, और अंतर और बाहर के बंधन ढीले होवेंगे। और जो कोई दूसरी जुगत या तरीक़ा अभ्यास का कहता है, वह निहायत कठिन होगा, और माया के घेर में ख़तम हो जावेगा, जिस सबब से जनम मरन का चक्कर चाहे देर के बाद होवे, जारी रहेगा ॥

१३–अब समझना चाहिये कि संत सतगुरु के सतसंग और उपदेश की महिमा ज़्यादह से ज़्यादह है। जिस

किसी ने उनके बचन चित्त देकर सुने और समझे, उसी के संसै और भरम दूर हो जावेंगे, और उनके जुगत को कमाई करके, अंतर में कुछ रस मिलेगा, और जलवह नज़र आवेगा। और जिस क़दर उनके चरनों में प्रीत पैदा होती जावेगी, उसी क़दर बाहर के यानी संसारी बंधन ढीले होते जावेंगे ॥

१४—अब ख़्याल करो कि सुरत असल में निरबंध थी, लेकिन माया के घेरे में उतर कर, उस पर खोल पै खोल चढ़ते गये, जिनका नाम देही है, और उनमें बंधन होता गया। पिंड में उतर कर सुरत का बंधन कारन और सूक्षम और अस्थूल शरीर में हो गया। और अस्थूल शरीर में बैठकर, इस लोक के भोगों और पदार्थों और कुटम्ब परवार और बिरादरी और दोस्त आश्ना और दुनिया के सामान वग़ैरः के संग बर्तावा करके, इस क़दर बंधन हुआ कि उसके सबब से दुख सुख ज़िंदगी भर सहना पड़ता है। और उसी की चाह और याद करके, मरते वक़्त निहायत दरजे की तकलीफ़ उठानी पड़ती है, और फिर देह धारन करके थोड़ी बहुत वही करतूत, जो पिछले जनम में करी, बारम्बार करनी पड़ती है, और वही दुख सुख और मौत का चक्कर सहना पड़ता है। यह सब हालत और कैफ़ियत बंधनों के सबब से पैदा हुई ॥

१५—अब जो कोई इन बंधनों से छूटकर फिर अपनी असली हालत हासिल करना चाहे, यानी निरबंध होने की ख़्वाहिश करे, तो उसको चाहिये कि सतगुरु के सन्मुख जावे, और उनसे और उनके सतसंग में प्रीत करे, और जो वह सुरत शब्द मारग का उपदेश करें, उसका शौक़ के साथ हर रोज़ अभ्यास करे यानी अपने मन और सुरत को सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल के चरनों में जोड़े, तो, आहिस्तह २ उसके संसारी और देही के बंधन सहज में ढीले होते जावेंगे, यानी इस नये बंधन से जो सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पैदा होगा, सब पिछले बंधन दुनिया और देह के आहिस्तह २ काटे जायंगे ॥

१६—यह क़ायदह है कि काँटे से कांटा निकाला जाता है, यानी एक बंधन से दूसरा बंधन काटा जाता है। सो जो कोई सतगुरु और उनके सतसंग से प्रीत करेगा, उसके संसारी यानी बाहरी बंधन ढीले होवेंगे, और जब उनके उपदेश के मुवाफ़िक़ उनके निज स्वरूप यानी शब्द और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में भाव लावेगा तब उसके देही के बंधन ढीले होते जावेंगे यानी जो गांठें लगी हैं वह खुलती जावेंगी, और रफ़्तह रफ़्तह एक दिन दोनों

क़िसम के बंधनों, यानी दुनिया और देह, से आज़ादगी हासिल हो जावेगी ॥

१७—सतगुरु के निज स्वरूप यानी शब्द से मतलब कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की धार से है। सो जिस क़दर प्यार और भाव कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में आता जावेगा, उसी क़दर मन और सुरत सिमट कर, और शब्द की धार यानी धुन को पकड़ के, ऊपर की तरफ़ चढ़ते जावेंगे, और रफ़्तह २ एक दिन कुल्ल मालिक के धाम में पहुंच कर, और उसका दर्शन करके, परम आनंद को प्राप्त होंगे। यह निज धाम माया के घेर के पार है, वहां पहुंच कर किसी क़िसम का बंधन या कष्ट और कलेश नहीं रहेगा, और अमर आनंद प्राप्त होगा ॥

१८—यह दुर्लभ बख़्शिश संत सतगुरु की दया और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर से हासिल होगी। तब जीव को मालूम होवेगा, कि निरबंधी कैसे माया के घेर में, मन और इंद्रियों के सबब से, देह और दुनिया और उसके सामान में फंस गया, और अनेक बंधनों में गिरिफ़्तार हो गया था, और फिर संत सतगुरु और कुल्ल मालिक के चरनों में प्रीत लाने से किस तरह सहज में, उसके सर्ब बंधन छूट